TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनाएँ

शाहजहाँपुर | मंगलवार 21 | नवम्बर 2023

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

वर्ष :2 | अंक :37 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

प्रदेश में बड़ी कम्पनियों पर रियायतों की बारिश

■ जमीन, बिजली और स्टांप ड्यूटी पर भारी छूट

लोक पहल

लखनऊ। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ डीआई) और फार्च्यून 500 कंपनियों को आकर्षित करने के लिए बनाई गई निवेश प्रोत्साहन नीति (एफ डीआई पालिसी) की मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त मनोज कुमार सिंह ने जारी कर दी। ये नीति फिलहाल एक नवंबर 2023 से 31 अक्तूबर 2028 तक प्रभावी रहेगी।

फार्च्यून 500 में फार्च्यून ग्लोबल 500 और फार्च्यून इंडिया 500 कंपनियों को शामिल किया गया है। निवेशकों को पांच साल बिजली के बिल में सौ फीसदी छूट मिलेगी। स्टांप ड्यूटी व पंजीकरण में 50 से 100 फीसदी छूट का प्रावधान किया गया है। इसके अतिरिक्त जमीन पर भी 75 से 80 फीसदी तक सब्सिडी का प्रावधान किया गया है।

निवेशकों को स्टांप ड्यूटी और पंजीकरण में छूट मिलेगी। ये छूट गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद में 50 फीसदी, मध्यांचल, पश्चिमांचल में 75 फीसदी और बुंदेलखंड व पूर्वांचल में 100 फीसदी होगी। सब्सिडी के एवज में निवेशक को उतनी ही रकम की बैंक गारंटी देनी होगी। विकास प्राधिकरणों से

जमील लेने पर स्टांप छूट के लिए शासन द्वारा एक पत्र निवेशक को दिया जाएगा। निजी डेवलपर से जमीन खरीदने पर इनवेस्ट यूपी द्वारा प्रमाणपत्र जारी किया जाएगा। इसी के आधार पर सब्सिडी मिलेगी।

एफडीआई के तहत निवेशकों को जमीन पर भी सब्सिडी मिलेगी। ये सब्सिडी न्यूनतम 75 फीसदी से 80 फीसदी होगी। इसकी समीक्षा सात दिन के अंदर इनवेस्ट यूपी के सीईओ की अध्यक्षता में गठित मूल्यांकन समिति करेगी। इस रिपोर्ट को अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त के नेतृत्व में गठित प्राधिकार समिति के सामने पेश किया जाएगा। समिति 15 दिन में प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार कर देगी। सब्सिडी प्राप्त करने के लिए जरूरी लेटर आफकम्फर्ट को निवेशकों को कंपनी से जुड़े 11 दस्तावेज अनिवार्य रूप से जमा करने होंगे।

राम मंदिर में पुजारी पद के लिये तीन हजार ने किया आवेदन, 200 साक्षात्कार के लिए चयनित

लोक पहल

अयोध्या। अयोध्या में श्रीरामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन राम मंदिर में पुजारी पद के लिये तीन हजार अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। उनमें से 200 को साक्षात्कार के लिये बुलाया गया है। ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरि ने बताया कि ट्रस्ट को प्राप्त 3000 आवेदनों में से 200 अभ्यर्थियों को उनकी योग्यता के आधार पर साक्षात्कार के लिये चुना गया है।

उन्होंने बताया कि साक्षात्कारकर्ताओं का तीन सदस्यीय पैनल इन चयनित अभ्यर्थियों से अयोध्या स्थित विश्व हिन्दू परिषद के मुख्यालय कारसेवक पुरम में साक्षात्कार करेगा। उनके अनुसार पैनल में वृंदावन के प्रसिद्ध हिंदू उपदेशक जयकांत मिश्रा और अयोध्या के दो महंत मिथिलेश नंदिनी शरण और सत्यनारायण दास शामिल हैं। गिरि ने बताया कि साक्षात्कार के जरिये पुजारी की नौकरी के लिए 20 उम्मीदवार चुने जाएंगे। उनके मुताबिक चयनित उम्मीदवारों को छह महीने के आवासीय प्रशिक्षण के बाद पुजारी के रूप में नियुक्त किया जाएगा और राम जन्मभूमि में विभिन्न पदों पर तैनात किया जाएगा। उन्होंने बताया कि '' साक्षात्कार के दौरान अभ्यर्थियों से संध्या वंदन क्या है, इसकी विधि क्या है और इस पूजा के मंत्र क्या हैं? भगवान राम की पूजा के लिए कौन-कौन से 'मंत्र' हैं और इसके लिए 'कर्म कांड' क्या हैं, इत्यादि सवाल पूछे जाएंगे। उनके अनुसार प्रशिक्षण के दौरान अभ्यर्थियों को नि:शुल्क आवास एवं भोजन मिलेगा एवं मानदेय के रूप में दो हजार रुपये भी दिये जायेंगे।

राजस्थान में दस लाख युवाओं को नौकरी, चार सौ रुपये में मिलेगा सिलेण्डर

कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव के लिए जारी किया घोषणापत्र

लोक पहल

जयपुर। कांग्रेस ने आज विधानसभा चुनावों के लिए अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है। इसमें किसानों और युवाओं के लिए बड़ा ऐलान किया गया है। इसमें 4 लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने का वादा किया गया है। इसके अलावा 10 लाख युवाओं को रोजगार दिया जाएगा। साथ ही किसानों के लिए स्वामीनाथन कमेटी की सिफारिशों के मुताबिक एमएसपी कानून लाने की बात कही गई है। इसके अलावा महंगाई और महिलाओं के हितों को ध्यान में रखते हुए 500 रुपये में मिलने वाले गैस सिलेंडर को अब 400 रुपये में देने की बात कही गई है।

हालांकि इस घोषणा पत्र से पहले ही कांग्रेस राजस्थान विधानसभा चुनावों के लिए 7 गारंटियां जारी कर चुकी है। इसमें महिलाओं को सालाना 10 हजार रुपये की आर्थिक सहायता, 500 रुपये में सभी को गैस सिलेंडर, सरकारी कॉलेज के प्रथम वर्ष में दाखिला लेने वाले युवाओं को फ्री टैब या लैपटॉप, 25 लाख रुपये का आपदा राहत बीमा

और किसानों से गोबर की खरीद, सरकारी कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना के लिए कानून व सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी मीडियम स्कूलों को बढ़ावा देने की घोषणा शामिल हैं।

पिछले विधानसभा चुनावों में भी कांग्रेस ने जिस जन घोषणा पत्र को जारी किया था उसे सत्ता में आते ही कैबिनेट से अप्रूव करवाकर नीति निर्धारक पत्र का दर्जा दिया गया। सरकार ने दावा किया कि उस घोषणा पत्र में किए 90 प्रतिशत से ज्यादा वादे सरकार पूरे कर चुकी है।

लेट लतीफ हुए 'मास्टरजी' तो कटेगा वेतन छुट्टी के बाद भी स्कूल में रुकेंगे 'गुरूजी'

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों की षिक्षा व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए सरकार रोज नए-नए नियम व कानून बना रही है। इन सबके बावजूद प्रदेश के बेसिक स्कूलों की दशा में कोई सुधार होता दिखाई नहीं दे रहा है। विद्यार्थियों को नियमित कक्षाएं उपलब्ध कराने के लिए अब सरकार ने एक नया फरमान जारी किया है। जिसके तहत अब शिक्षकों की दो समय हाजिरी लगेगी। सुबह 15 मिनट देर से पहुंचने की दशा में उनका पूरे दिन का वेतन कट जाएगा। छुट्टी के बाद भी हाजिरी के बाद 15 मिनट स्कूल में रुकना पड़ेगा। प्रदेश के सात जिलों में नई व्यवस्था 20 नवंबर से लागू हो जाएगी। दिसंबर से पूरे प्रदेश में व्यवस्था प्रभावी होगी। इसके लिए आदेश जारी कर दिया गया है। प्राथमिक शिक्षक संघ ने नई व्यवस्था को अव्यावहारिक बताते हुए विरोध का ऐलान कर दिया है।

महानिदेशक स्कूल शिक्षा विजय किरन आनंद की ओर से जारी पत्र में बेसिक स्कूलों की पंजिकाओं के डिजिटाइजेशन के निर्देश जारी किए गए है। पत्र में टाइम एंड मोशन स्टडी के आधार पर शैक्षिक कार्यों के लिए समय अवधि एवं अन्य कार्यों के साथ-साथ विद्यालय स्तर पर प्रयोग की जानी वाली

12 पंजिकाओं को डिजिटाइजेशन के निर्देश दिए गए हैं। इसके लिए सभी विद्यालयों को टैबलेट प्रदान किए जाएंगे। प्रेरणा पोर्टल पर स्कूल की उपस्थिति पंजिका, प्रवेश पंजिका, कक्षावार छात्र उपस्थिति पंजिका, एमडीएम पंजिका, समेकित निशुल्क सामग्री वितरण पंजिका, स्टाक पंजिका का अपलोड कर आनलाइन ही पूरा विवरण दर्ज किया जाएगा। नई व्यवस्था के तहत प्रेरणा पोर्टल पर सर्दियों में पौने नौ बजे से नौ बजे तक तथा ग्रीष्म ऋतु एक अप्रैल से 30 सितंबर तक सुबह पौने आठ बजे से आठ बजे तक पोर्टल खुलेगा। इसी तरह छुट्टी के बाद सवा दो बजे से ढाई बजे तथा सर्दियों में शाम सवा तीन से साढ़े तीन बजे तक पोर्टल पर हाजिरी लगेगी। इसके बाद पोर्टल पर काम करना बंद कर देगा। एमडीएम का भी विवरण दोपहर 12 से 12.30 बजे तक दर्ज हो सकेगा। पायलट प्रोजेक्ट के तहत प्रथम चरण में लखनऊ, हरदोई, लखीमपुर खीरी, रायबरेली, सीतापुर, उन्नाव तथा श्रावस्ती जिले में नई व्यवस्था को लागू किया जाएगा। दिसंबर से पूरे प्रदेश में व्यवस्था प्रभावी हो जाएगी। प्राथमिक शिक्षक संघ ने महानिदेशक के आदेश को अव्यावहारिक बताया है।

योगी सरकार का बड़ा एक्शन: प्रदेश में हलाल सर्टिफिकेट वाले प्रोडक्ट्स पर लगा प्रतिबंध

लोक पहल

लखनऊ। अवैध ढंग से 'हलाल सर्टिफिकेट' देने के काले कारोबार को उत्तर प्रदेश में बैन कर दिया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा मामले का संज्ञान लेने के बाद प्रतिबंध के बारे में आदेश भी जारी कर दिया गया। आदेश के मुताबिक हलाल प्रमाणन युक्त खाद्य उत्पादों के निर्माण, भण्डारण, वितरण एवं विक्रय पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबन्ध लगाया जाता है। हलाल प्रमाणीकरणयुक्त औषधि, चिकित्सा युक्ति व प्रसाधन सामग्रियों का विनिर्माण, भंडारण वितरण एवं क्रय-विक्रय उत्तर प्रदेश राज्य में करते हुए पाये जाने पर संबंधित व्यक्ति-फर्म के विरुद्ध कठोर विधिक कार्यवाही की जाएगी।

हाल के दिनों में प्रदेश सरकार को ऐसी जानकारी मिल रही थी कि डेरी उत्पाद, चीनी, बेकरी उत्पाद, पिपरमिन्ट ऑयल, नमकीन रेडी-टू-ईट वेवरीज व खाद्य तेल जैसे उत्पादों के लेबल पर हलाल प्रमाणन का उल्लेख किया जा रहा है। यही नहीं, कतिपय दवाइयों, चिकित्सा युक्तियों व प्रसाधन सामग्रियों के उत्पाद के पैकिंग-लेबलिंग पर हलाल प्रमाण पत्र का भी अंकन किए जाने की सूचना मिली है। औषधियों, चिकित्सा युक्तियों व प्रसाधन सामग्रियों से संबंधित सरकार के नियमों में हलाल प्रमाणीकरण का अंकन उत्पादों के लेबल पर किये जाने का कोई प्रावधान नहीं है और न ही औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 194 व तत्सम्बन्धी नियमों में हलाल प्रमाणीकरण किये जाने का कोई प्रावधान है।

ऐसी स्थिति में यदि किसी औषधि, चिकित्सा युक्ति व प्रसाधन सामग्री के लेबल पर हलाल प्रमाणीकरण से सम्बन्धित किसी भी तथ्य का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अंकन किया जाता है, जो एक दंडनीय अपराध है। इसी प्रकार, खाद्य पदार्थों के संबंध में लागू अधिनियम व नियमावली के अनुसार खाद्य पदार्थों के लिए शीर्षस्थ संस्था भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण को खाद्य पदार्थों के मानकों का निर्धारण करने का अधिकार दिया गया है। जबकि हलाल प्रमाणन एक समानान्तर व्यवस्था है जो खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता के विषय में भ्रम की स्थिति उत्पन्न करता है एवं सरकार के नियमों का उल्लंघन करता है।

बता दें कि लखनऊ कमिश्नरेट में इस बाबत एक एफआईआर भी दर्ज की गई है। एफआईआर के मुताबिक हलाल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड चेन्नई, जमीयत उलेमा हिन्द हलाल ट्रस्ट दिल्ली, हलाल काउंसिल ऑफ इंडिया मुम्बई, जमीयत उलेमा महाराष्ट्र मुम्बई आदि द्वारा एक धर्म विशेष के ग्राहकों को मजहब के नाम से कुछ उत्पादों पर हलाल प्रमाणपत्र प्रदान कर उनकी ब्रिकी बढ़ाने के लिए आर्थिक लाभ लेकर अवैध कारोबार चलाया जा रहा है।

आ गया न्योता: 23 नवम्बर से बैण्ड-बाजा-बारात की धूम

सहालग के चलते गुलजार हुए बाजार

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार देवोत्थान एकादशी से पहले भगवान विष्णु नींद में रहते हैं। जिसके चलते हिन्दू धर्म में शुभ कार्यो पर पूरी तरह से रोक लग जाती है। दीपावली के बाद कार्तिक मास में पड़ने वाली एकादशी को देवोत्थान एकादशी या देव दीवाली भी कहते है। इस दिन से शुभ कार्यो पर लगी रोक हट जाती है और शादी विवाह का सीजन आरंभ हो जाता है। देवात्थान एकादशी का पर्व इस बार 23 नवम्बर को धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। मन्दिरों से लेकर घरों तक विधि विधान से पूजा अर्चना की जायेगी। इसके साथ ही लम्बे समय से रूके हुए शुभ कार्यो पर भी लगी रोक हट जायेगी और विवाह शादी व अन्य शुभ कार्यो का शुभारंभ हो जाएगा। दीवाली के बाद सहालग के सीजन को लेकर बाजार भी गुलजार होने लगा है। शादी विवाह के लिए लोग अभी से खरीददारी में व्यस्त है। कपड़े, ज्वैलर्स, इलेक्ट्रानिक के सामान, वाहनों की बुकिंग के लिए शोरूम पर भारी भीड़ देखी गई। कई टेन्ट हाउस, मैरिज लॉन, रिसार्ट भी शादियों के आयोजन के लिए तैयारियों को अन्तिम रूप देने में लगे हुए है। साथ ही बैण्ड बाजा, गेस्ट हाउस, होटल व धर्मशाला भी आने वाले सहालग के सीजन के लिए तैयारियों में जुट

गए है। बाजार भी पूरी तरह से गुलजार है जिन घरों में इस सीजन में शादी विवाह होने वाले हैं वहां लोग तैयारियों में जुटे है कपड़े, बर्तन, साड़ी, ज्वलैरी व इलेक्ट्रानिक्स के सामानों की खरीददारी में व्यस्त है। सहालगी सीजन को लेकर बैण्ड बाजा, धर्मशाला, टेन्ट हाउस व गेस्ट हाउस संचालकों ने तैयारियां पूरी कर ली है। जहां एक ओर गेस्ट हाउस, रिसार्ट, मैरिज लॉन व धर्मशालाओं को रंगाई पुताई कर डेकोरेट किया जा रहा है वहीं टेन्ट हाउस स्वामी भी नए पर्दे, सीलिंग और फर्नीचर से लोगों को लुभाने का पूरा प्रयास करने में जुटे है। देवात्थान एकादशी से तीन दिन पूर्व ही बाजारों में खासी चहल पहल दिखाई दे रही है। जूता, चप्पल, चूड़ियां, कपड़े, टेलरिंग शॉप व मॉल में खरीददारों की भीड़ जुटने लगी है। साथ ही माली, रथ, लाईट, डीजे वालों ने भी सहालग की तैयारियां शुरू कर दी है। मेंहदी लगाने वालों के यहां भी बुकिंग की लाईन लगने लगी है।

आगामी 23 नवम्बर को देवोत्थान एकादशी है देवोत्थान एकादशी के साथ सहालग के सीजन की शुरूआत हो रही है। हमारे यहां लोग शादी में देने के लिए इलेक्ट्रानिक का सामान लेने पहुंच रहे है। हमारे यहां विवाह पैकेज की शुरूआत 27990/- से है जिसमें टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन शामिल है साथ ही एक उपहार भी दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त हमारे यहां विश्व के ख्यातिलब्ध इलेक्ट्रानिक ब्रांड के टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन, एसी आदि उचित मूल्य पर उपलब्ध है। **सुवनीत पाठक, इलेक्ट्रानिक कारोबारी**

आगामी 23 नवम्बर से विवाह होना आरंभ हो जाएंगे। हमने इस बार विषेष रूप से पर्दे, सीलिंग और फर्नीचर मंगाया है इस बार हमारे यहां विदेशी फर्नीचर आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहेगा। शादियों को लेकर कई महीने पहले से लोगों ने बुकिंग करा ली है। हमने भी तैयारियां शुरू कर दी है और हमारा यह प्रयास रहता है कि ग्राहकों को उचित मूल्य पर बेहतर सजावट और सुविधाएं उपलब्ध करा सकें। **भूपेन्द्र सिंह 'डिंपल' अमर टेन्ट हाउस।**

शादियों को लेकर लोगों में खासा उत्साह है आगामी 23 नवम्बर से शादियों का सीजन आरंभ हो रहा है इसके लिए लोगों द्वारा ज्वैलरी की खरीददारी की जा रही है। विवाह को ध्यान में रखते हुए इस बार विभिन्न प्रकार की ज्वैलरी हमारे यहां उपलब्ध है। **रवि सर्राफ सर्राफा कारोबारी**

देवोत्थान एकादशी 23 नवम्बर वृहस्पतिवार को होगी। इसी दिन से तुलसी विवाह के साथ-साथ विवाह की शहनाइयां भी गूंजेगी। 147 दिन बाद मंगल ध्वनि के स्वर सुनाई देंगे। इस वर्ष 23 नवम्बर से 29 नवम्बर तक विवाह मुहूर्त रहेंगे। दिसम्बर महीने में 3, 4, 7, 8 व 9 जनवरी में 18, 21, 22, 29, 30, 31 व फरवरी महीने में 01, 06, 14, 17, 18 व मार्च में02, 03, 04, 05, 06, 07, 08 व 09 तक शादियां हो सकेगी। इस प्रकार अलग-अलग तिथियों में इस बार 29 दिनों तक शहनाई गूंजेगी। **पं. राम खिलावन मिश्रा, पुजारी**

शोकसभा में दिवंगत पत्रकार हेमंत डे को पत्रकारों ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

नगर आयुक्त और एडीएम ने भी अर्पित किये श्रृद्धा सुमन

लोक पहल

शाहजहांपुर। जनपद के वरिष्ठ पत्रकार व इंडियन एक्सप्रेस जनसत्ता के संवाददाता स्व. हेमंत डे के आकस्मिक निधन पर शाहजहांपुर प्रेस क्लब की ओर से प्रेस क्लब में आयोजित श्रृद्धांजलि सभा में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शोकसभा में नगर आयुक्त संतोष शर्मा श्रृद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि हेमंत डे एक उर्जावान और पत्रकारिता की समझ रखने वाले पत्रकार थे। वह जनपद में अंग्रेजी पत्रकारिता के एक स्तंभ थे। अपर जिलाधिकारी (वि. रा.) डा. सुरेश कुमार ने कहा कि पत्रकार हेमंत डे का निधन एक अपूर्णनीय क्षति है, उनकी संवेदनाएं उनके परिवार के साथ हैं। साथ में काम करने वाले पत्रकार सुयश सिन्हा ने नम आँखों से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हेमंत डे के निधन को अपनी व्यक्तिगत क्षति बताया। पत्रकार मो. इरफान ने कहा कि हेमंत डे के साथ उन्होंने कई वर्षों तक काम किया हमारा पारिवारिक रिश्ता रहा है। वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप दीपक ने स्व. हेमंत डे को काव्यात्मक श्रृद्धांजलि दी।वरिष्ठ पत्रकार अंबुज मिश्रा ने कहा कि डे साहब के साथ उनका काफी साथ रहा उन्हें सदैव भ्रातवत स्नेह दिया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के वरिष्ठ पत्रकार प्रेम शंकर ने डे साहब को पत्रकारिता की गहरी समझ रखने वाला पत्रकार बताया। वरिष्ठ पत्रकार शिवकुमार ने पत्रकारों के लिए कल्याण कोष बनाये जाने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार ओंकार मनीषी, आरिफसिद्दीकी, सरदार शर्मा, धनंजय बाजपेयी, हामिद फरीदी, राम विलास सक्सेना, अशोक गुप्ता, राजीव शर्मा, दीप श्रीवास्तव आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शोकसभा का संचालन डा. सुरेश मिश्रा ने किया। इस अवसर पर पत्रकार संजीव कुमार गुप्ता, धनंजय बाजपेई, हामिद अफरीदी, संजय श्रीवास्तव, अमित सक्सेना, शिशांत शुक्ला, शैलेंद्र बाजपेई, पंकज सक्सेना, मनोज मिश्रा, सुशील शुक्ला, नंदलाल, नीरज कुमार, पदम हस्त दिवाकर, दीपक साहू, मोअज्जम खान, काशिफ पठान, अफाक, इमरान जिलानी, अमरदीप रस्तोगी, ऐनुलहक, महमूद खान, वर्तिका सक्सेना, विष्णु दयाल कनौजिया, अनिल मिश्रा, मनोज मिश्रा, राजीव रंजन, विशेक मिश्रा, राम ललित तिवारी, कमल सिंह, जगदीश सिंह, अंकित जोहर, विवेक वर्मा सहित स्वर्गीय हेमंत डे के पुत्र अभिराज डे, देवालय डे और दिवांकुर डे भी मौजूद रहे।इस मौके पर प्रेस क्लब में दिवंगत पत्रकार हेमंत डे का एक चित्र भी स्थापित किया गया।

कान्हा गौशाला में मनाई गई गोपाष्टमी

लोक पहल

शाहजहाँपुर। मघईटोला स्थित कान्हा गौशाला में गोपाष्टमी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में महापौर अर्चना वर्मा ने गौ पूजन किया तथा गौवंशों को गुड़, चना इत्यादि खिलाकर गौ सेवा की। इसके उपरांत महापौर ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। उक्त कार्यक्रम में महापौर के अतिरिक्त अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, मुख्य सफाई निरीक्षक हरिवंश दीक्षित, सहायक अभियंता जलकल प्रेम चन्द्र आर्य व अवर अभियंता जलकल सूरज प्रजापति के अतिरिक्त गजेंद्र गंगवार, आलोक मिश्रा, गौशाला के केयरटेकर गौरव अग्निहोत्री तथा गौसेवक उपस्थित रहे।

धूमधाम से मनाई गई आंवला नवमी, महिलाओं ने की पूजा-अर्चना

लोक पहल

शाहजहांपुर। परिवार की सुख समृद्धि के लिए आंवला नवमी पर महिलाओं ने आंवला के पेड़ की परिक्रमा लगाकर पूजा-अर्चना की। पेड़ के नीचे घर से बनाकर लाए गए प्रसाद का भोग लगाया। इसके बाद उसी प्रसाद से अपना व्रत खोला। कार्तिक माह की नवमी आंवला नवमी के रूप में मनाई गई। शहर के इंदिरा नगर स्थित ऋषि आश्रम में लगे आंवला पेड़ के नीचे सामूहिक रूप से महिलाएं पूजा-अर्चना को उमड़ी। महिलाओं द्वारा सामूहिक पूजन, वृक्ष परिक्रमा सहित अन्य धार्मिक कार्यक्रम श्रद्धा पूर्वक संपन्न किए गए। इस दौरान महिलाओं ने आंवला वृक्ष की 108 बार परिक्रमा लगाकर पूजा की। महिलाओं द्वारा घर से बनाकर लाई गई भोजन सामग्री को सामूहिक रूप से बैठकर ग्रहण किया गया। इसके अलावा भी जगह जगह कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की नवमी पर को आंवला नवमी मनाई गई।

मोक्ष का मार्ग खोलता है कार्तिक माह का जप तप

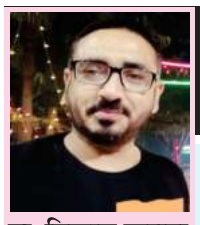

डा. विकास खुराना
इतिहासकार

हिंदू धर्म में कार्तिक माह पुण्य का महीना है।पुराणों के अनुसार इसी माह में कुमार कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था। कुमार कार्तिकेय के पराक्रम को सम्मान देने के लिए ही इस माह का नाम कार्तिक रखा गया है। कार्तिक माह तप और व्रत का माह है। इस माह में भगवान की भक्ति और पूजा अर्चना करने से मनुष्य की सारी इच्छाएं पूर्ण होती हैं। पुराणों के अनुसार इस मास में भगवान विष्णु नारायण रूप में जल में निवास करते हैं। इसलिए कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक नियमित सूर्योदय से पहले नदी या तालाब में स्नान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। शास्त्रों के अनुसार जो मनुष्य कार्तिक मास में प्रतिदिन गीता का पाठ करता है उसे अनंत पुण्यों की प्राप्ति होती है। गीता के एक अध्याय का पाठ करने से मनुष्य घोर नरक से मुक्त हो जाते हैं। स्कंद पुराण के अनुसार इस महीने में अन्न दान करने से पापों का सर्वथा नाश हो जाता है।

धार्मिक दृष्टि से इस महीने का महत्व: पुराणों के अनुसार इसी माह में कुमार कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था। कुमार कार्तिकेय के पराक्रम को सम्मान देने के लिए ही इस माह का नाम कार्तिक रखा गया है। पौराणिक कथा के अनुसार शंखासुर नामक असुर ब्रह्माजी से वेदों को चुराकर भाग रहा था। वेद उनके हाथों से छूटकर समुद्र में प्रवेश कर गए। देवताओं की प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने कहा कि मैं मछली का रूप धारण करके अभी वेदों को लाता हूं। उसी समय भगवान ने कहा कि अबसे कार्तिक के महीने में सभी वेदों के साथ मैं स्वयं जल में रहूंगा। इस महीने में नियमित स्नान पूजन करने वाले पर कुबेर भी कृपा करेंगे। जो धर्मात्मा व्यक्ति इस महीने में मेरी पूजा करेगा उसे यमलोक और स्वर्गलोक नहीं सीधा बैकुंठ की प्राप्ति होगी और वह जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाएगा।

कार्तिक मास के महात्म्य में बताया गया है कि एक गणिका थी। जवानी ढलने लगी तो उसे मृत्यु और उसके बाद की स्थिति का विचार परेशान करने लगा। एक दिन वह एक ऋषि के पास गई और अपनी मुक्ति का उपाय पूछा। ऋषि ने गणिका को कार्तिक स्नान का महात्म्य बताया। गणिका हर दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करके तट पर दीप जलाकर भगवान विष्णु और सूर्यदेव की पूजा करने लगी। इस पुण्य के प्रभाव से बिना कष्ट शरीर से उसके प्राण निकल गए और दिव्य विमान में बैठकर बैकुंठ चली गई।कार्तिक मास की महिमा का वर्णन करते हुए एक कथा देवी रुक्मिणी की भी है। पद्म पुराण के अनुसार पूर्वजन्म में रुक्मिणी गंगा तट पर रहने वाली एक विधवा ब्राह्मणी थीं। वह नियमित रूप से गंगा स्नान करके तुलसी की पूजा किया करती थीं और भगवान विष्णु का ध्यान करती थीं। कार्तिक मास की ठंड में एक दिन स्नान करके पूजा करने के क्रम में इनकी आत्मा को शरीर से मुक्ति मिल गई। इनकी आत्मा के पास पुण्य की इतनी पूंजी थी कि उन्हें देवी लक्ष्मी के समान स्थान प्राप्त हो गया। इसी पुण्य के प्रभाव से वह भगवान श्रीकृष्ण की पटरानी बनीं।कार्तिक महात्म्य का वर्णन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने सत्यभामा को बताया था कि वह पूर्वजन्म में भगवान विष्णु की पूजा किया करती थीं। जीवन भर कार्तिक मास में सूर्योदय से पूर्व स्नान करके वह तुलसी को दीप दीखाती थीं। इस पुण्य से सत्यभामा श्रीकृष्ण की पत्नी हुईं। भगवान श्रीकृष्ण ने बताया कि कार्तिक का महीना सभी महीनों में मुझे अति प्रिय है। जो भी व्यक्ति इस महीने में अन्नदान, दीपदान करता है उस पर कुबेर महाराज भी कृपा करते हैं।

शिक्षा के साथ बच्चों की प्रतिभाओं को निखारने का काम भी करें विद्यालय : संतोष शर्मा

■ श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ में बाल मेला 'स्पंदन' का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ में बाल मेला 'स्पंदन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने फीता काटकर किया। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती, विद्यालय सचिव अशोक अग्रवाल, एसएस कालेज के सचिव डॉ अवनीश मिश्रा व डीएस इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. अमीर सिंह ने भगवान गणेश की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व माल्यार्पण किया। नन्हें मुन्ने बच्चों ने स्वागत गीत मनमोहक नृत्य महिला सशक्तिकरण पर नाटिकाआदि अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। विद्यालय की प्रधानाचार्या डा मेघना मेंहदीरता ने मुख्य अतिथि को शाल और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने कहा कि इस तरह के आयोजन बच्चों की प्रतिभा को निखारने का काम करते हैं। विद्यालयों में शिक्षा के साथ साथ अन्य गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की जरुरत है। जूनियर वर्ग की छात्राओं ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। इस दौरान सीबीएसई क्लस्टर मीट मथुरा के विजयी प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन करते हुए प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। मुख्य अतिथि नगर आयुक्त संतोष शर्मा, व अन्य अतिथियों ने विद्यालय परिसर में लगे 'स्पंदन' मेले का भ्रमण करते हुए बच्चों का उत्साहवर्धन किया व 'अन्वेषण' विज्ञान प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। मेले में विभिन्न खाने पीने व गेम स्टाल का भी सभी ने आनंद लिया। अंत में प्रधानाचार्या ने सभी का आभार व्यक्त किया।

आयोजनों के लिए तैयार अटल बिहारी बाजपेयी प्रेक्षाग्रह

■ देखरेख समिति में डीएम अध्यक्ष व सिटी मजिस्ट्रेट सचिव बने, कई गणमान्य लोग भी शामिल

लोक पहल

शाहजहाँपुर। शहर में नवनिर्मित भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी प्रेक्षागृह (ऑडिटोरियम) अब कार्यक्रमों के आयोजन के लिए तैयार है। प्रेक्षाग्रह की देखरेख के लिए एक समिति का गठन कर दिया गया है। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना की अध्यक्षता में गठित समिति के अध्यक्ष डीएम और सचिव नगर मजिस्ट्रेट बनाए गए हैं। इनके अलावा भी प्रशासनिक अधिकरियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिसके बाद आमजन ऑडिटोरियम में विवाह समेत सभी तरह के सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन कर सकेंगे।

प्रेक्षागृह को सामाजिक कार्यों जैसे विवाह समारोह, जन्म दिवस पार्टी, प्रीतिभोज, मनोरंजन पूर्ण कार्यक्रम, नाट्य समारोह, सरकारी कार्यक्रमों आदि के लिए प्रयोग में किया जाएगा। इसके रखरखाव के लिए अनुरक्षण शुल्क में विवाह समारोह के लिए 75००० रुपये, छोटे सामाजिक कार्य जैसे जन्मदिवस पार्टी, प्रीतिभोज आदि के लिए 35००० रुपये, मनोरंजन पूर्ण कार्यक्रमों के लिए 12००० रुपये, सामान्य कार्यक्रमों के लिए 1०००० रुपये प्रतिदिन निर्धारित किया गया है। प्रेक्षागृह में दो मिनी हॉल हैं, जिनका अनुरक्षण शुल्क 2००० रुपये प्रतिदिन प्रति हॉल निश्चित किया गया है। प्रेक्षागृह में पार्किंग की समुचित व्यवस्था की गई है। वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कहा कि यह प्रेक्षागृह जिले के लोगों के लिए एक धरोहर है जिसका अधिक से अधिक प्रयोग हो सके, इसका विशेष ध्यान रखते हुए बहुत ही कम शुल्क निर्धारित किया गया है।

डीएम उमेश प्रताप सिंह ने बताया कि समिति में अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग, परियोजना प्रबंधक सीएंडडीएस, क्षेत्राधिकार नगर, अधिशासी अभियंता जल निगम, अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड द्वितीय को पदेन सदस्य बनाया गया है। जबकि जन सामान्य से सीधा जुड़ाव रखने के उद्देश्य से प्रेक्षागृह समिति के आजीवन सदस्य के रूप में माधव गोपाल अग्रवाल, डॉ. उपेंद्र देव कपूर, डॉ. परविंदर सिंह, चंद्रशेखर खन्ना, हितेश अग्रवाल, अनुज देव, राजेंद्र सिंह, इकबाल हुसैन, राजाराम वर्मा, विवेक तुली, दीपक शर्मा, डॉ. आकाश श्रीवास्तव को शामिल किया गया है।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया छठ पूजा महापर्व

■ उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रतियों ने खोला व्रत

लोक पहल

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर में लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शहर के खासतौर से पूर्वांचल के रहने वाले लोगों ने लोधीपुर, हनुमतधाम, राजघाट में बनाए गए छठ घाट में पूजा अर्चना कर सूर्य की आराधना की। चार दिन तक लोक आस्था के महापर्व छठ की छटा बिखरी रही। छठ पूजा के चौथे दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया गया, फिर व्रतियों ने 36 घंटे का व्रत खोला। इसके साथ ही छठ महापर्व का समापन हो गया। महापर्व के आखिरी दिन सूर्य देव को अर्घ्य देने के लिए शहर में लोधीपुर, हनुमतधाम स्थित घाटों पर तैयारियां की गईं थीं। इन घाटों पर श्रद्धालुओं ने पहुंचकर पूजा अर्चना की।

सूर्य उपासना का महापर्व छठ जिले में धूमधाम के साथ मनाया गया। उगते सूर्य देव को अर्घ्य देकर 36 घंटे बाद व्रती महिलाओं ने पारण किया। नदी के घाटों, मोहल्लों और घरों पर व्रतियों-श्रद्धालुओं की ने उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया। लोधीपुर स्थित खन्नौत नदी तथा राजघाट के पास गर्रा नदी के घाट पर मेले की तरह नजारा देखने को मिला। जहां चारों तरफ श्रद्धा और भक्ति में लोग लीन दिखे।

उगते हुए सूर्य देव को अर्घ्य देने के लिए तड़के चार बजे से ही घाटों पर श्रद्धालुओं की भीड़ लगने लगी थी। इसी तरह से हनुमतधाम स्थित घाट पर व्रतियों की भीड़ उमड़ी। जिन्होंने उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया। इनके अलावा रिलायंस टाउनशिप, कृभको टाउनशिप, हनुमतधाम, पीपप घाट और गर्रा घाट पर भी व्रती महिलाओं ने छठ मइया की पूजा-अर्चना की और उगते सूर्य को अर्घ्य दिया।

सुबह ब्रह्ममुहूर्त में ही लोग घाट पर पहुंचने लगे। पूजन सामग्री गन्ना, फल आदि से भरी बांस की टोकरी सर पर रखकर पुरूष घाट पर पहुंचे। भोर अंधेरे में ही सैकड़ों महिलाएं, पुरूष, बच्चे शहर के विभिन्न घाटों पर सूर्य के दर्शन करने के लिए प्रतिक्षारत दिखाई दिए। सूप में हरी सब्जियां, ठेकुआ आदि लेकर महिलाओं ने नदियों में खड़े होकर सूर्य देव को अघर्य दिया और अपने पति की दीर्घायु होने के साथ-साथ परिवार की सुख सम्पन्नता की कामना की। इस दौरान युवाओं व बच्चों ने जमकर आतिशबाजी का लुत्फ भी उठाया। छठ उत्सव में शहर के सभी घाटों पर महिलाओं के साथ-साथ परिवार की युवतियों और बच्चों ने भी पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ पूजा में उनकी सहायता की। पूर्वांचल महासभा ने छठ पूजा में लोगों का सहयोग किया। महासभा के अध्यक्ष सतीष चन्द्र मिश्रा, कार्यकारी अध्यक्ष वीरेन्द्र नाथ राय, उपेश रावत, कामेश्वर सिंह, कमलेश यादव, रमन उपाध्याय, त्रिवेणी सहाय, सुनील तिवारी, अनिल मौर्या आदि का सहयोग रहा। इस दौरान युवाओं और युवतियों में सेल्फी लेने की होड़ लगी रही।

धरोहर

रंगमहल से केरूगंज और फिर बना रंगमहला

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

रंगमहला के ओर से दक्षिण की ओर चढ़ती सड़क पर चढ़ कर किसी के भी कदम जब केरूगंज बाजार के सिरहाने पड़ेंगे तो उसके सामने आसमान से बतियाती एक लाल चिमनी अनायास आ जायेगी। यह लाल चिमनी एक समूचा उपन्यास अपने में समेटे है लेकिन उससे भी दिलचस्प रंगीन इतिहास वह स्थान अपने में समेटे हैं जिसे आज हम केरूगंज कहते हैं जबकि उसका असली नाम रंगमहल है। एक भौतिकवादी केरू ने रंगमहल को बाहर खदेड़ कर छोटा सा रंगमहला बना दिया और एक खूबसूरत स्थान का इस्तेमाल अपने व्यवसायिक लाभ के लिए किया। पहले रंगमहल बनाम रंगमहला की कैमस्ट्री पर बात करते हैं। नबाब अब्दुल्ला खान (1729 – 1779) की पुत्री की शादी बरेली के हाफिज उल मुल्क के पुत्र से साथ हुई थी। नबाब ने अपनी पुत्री के लिए किले के उत्तर में पड़े एक विस्तृत टीले पर खूबसूरत भवन का निर्माण कराया, जिसे रंगमहल कहा जाता था। इसके अंदर सुंदर इमारतें, बाजार, छतों पर जाने के लिए जीने और खेल तमाशे दिखाने वाले मदारियों आदि के लिए मैदान थे। रंगमहल के पांच दरवाजे थे। एक दरवाजा रामगंज की ओर खुलता है जिसकी बनावट अभी भी उसे उसी काल का घोषित कर रही है। कभी इस पर भारी दरवाजा चढ़ा था और इसके अंदर और बाहर विकराल भाले लिए योद्धा सुरक्षार्थ तैनात रहते। मुजफ्फर नामा, तवारीखे शाहजहांपुर आदि पुस्तकों के अनुसार रंगमहल में पूरा बाजार लगता था जिसमें हर तरह की जींस बिकती थी। इसमें महिलायें दूकानदार होती थीं और शहजादियां व उनका अमला खरीदार। 1779 में नबाब अब्दुल्लाखां की मौत हो गयी। उनकी मौत के बाद भी शहजादियां और उनकी संतति काबिज रही। अब्दुल्ला खां के बाद उनके बड़े पुत्र फैज खां नबाब बने। उनके दौर में भी रंगमहल आबाद रहा। अपनी बहन की मिल्कियत में नबाब फैज ने कोई दखलंदाजी नहीं की। 31 मई 1857 को जब शाहजहांपुर में भी क्रान्ति का विस्फोट हुआ तब एक बारगी शहर में अराजकता जैसा माहौल बन गया। शहर की सड़कों पर क्रांतिकारियों का एक तरह से कब्जा हो गया। इस भगदड़ में रंगमहल भी खाली हो गया। सभी निवासी किले में भाग गए या सुरक्षित स्थानों पर, बड़ी बात नहीं कि क्रांतिकारी सिपाहियों ने खाली पड़े इस स्थान पर कब्जा करके अपना ठिकाना बना लिया हो। जो भी हो, रंगमहल अपनी आभा खोने लगा था। 1857 की क्रान्ति असफल रही। अंग्रेजों ने किला तोप से उड़ा दिया। अप्रेल 1858 में अंग्रेजी शासन की पुनः वापसी हो गयी। अपनी सत्ता को मजबूत करने के लिए अंग्रेजों ने मनसब बेगम के मकबरे को रेजीडेंसी बनाया। 1857 में रौसर कोठी में अंग्रेजों की एक शराब फैक्ट्री लगी थी जो विगत सोलह बर्षों से काम कर रही थी। क्रान्ति के दौरान फैक्ट्री को क्रांतिकारियों ने लूट लिया। तत्कालीन मालिक केरू और उनके अंग्रेज साथी जान बचा कर भाग गए। 1858 की अप्रेल – मई में अंग्रेजों ने सैनिकों की शराब के लिए मिस्टर केरू को वापस बुला कर उजाड़ पड़े रंगमहल में स्थान दे दिया। इस पर अब केरू एंड कम्पनी का कब्जा हो गया। कम्पनी ने शराब बनाने के लिए गन्ने के रस को उबालने के लिए लाल ईंटों की एक चिमनी का निर्माण कराया। कई वर्ष यहां शराब बनायी जाती रही। केरू के नाम पर ही रंगमहल का नाम केरूगंज हो गया। बाद में फैक्ट्री फिर अपने मूल स्थान पर चली गयी। यहां बनायी जाने वाली शराब के ब्रांड का नाम कम्पनी के संस्थापक मैक्सवेल के नाम पर मैकडॉवल रखा गया। अब लाख टके का सवाल यह है कि कम्पनी मूल स्थान पर क्यों चली गयी। इसके बारे में मैंने बुजुर्गों से सुना की फैक्ट्री में चीटे लग गये। चीटे भी लाखों करोड़ों की तादाद में, हर तरफचीटे ही चीटे। उन्हें हटाने मारने के सब प्रयास बेकार रहे। वे मानों रक्तबीज की संतान थे। अंततः कम्पनी प्रबंधन ने इस स्थान को छोड़ दिया और कम्पनी मूल स्थान पर लौट गयी। एक कथा यह भी कही जाती है कि खन्नौत के कारण फैक्ट्री तक गन्ना पहुँचने में दिक्कते आने लगीं तो कम्पनी अपने मूल स्थान रौसर गाँव लौट गयी। आजादी के बाद शाहजहांपुर आये सिखों और मारवाड़ी समुदाय के लिए इसमें दूकाने एलाट कर दी गयीं। यहां अनाज की बड़ी बड़ी आढ़तें खुल गयीं। अन्य समुदायों की भी दूकाने उसमें थीं। 1952 में नगर पालिका के तत्कालीन चेयरमैन फज्जलउरहमान खां ने सिख समुदाय के लिये कुछ दुकानों का निर्माण कराया। ऐसी ही एक दूकान के माथे पर लगे पत्थर पर लिखा है कि गुरु नानक मार्केट का शिलान्यास खानबहादुर फज्जलउरहमान खां साहब चेयरमैन म्युनिस्पिल बोर्ड के कर कमलों द्वारा आज`7 जून 1952 को रखा गया। इसके नीचे पत्र में जहाँ भवदीय लिखते है वहां शाहजहांपुर लिखा हुआ है। इसके नीचे उर्दू भाषा में भी यही इबारत लिखी है, खां साहब छोटे खां के नाम से प्रसिद्ध थे। कई साल चेयरमैन रहे और विधायक भी, अस्तु, अब रंगमहल केरूगंज है पुरानी इमारतें नष्ट हो चुकी हैं। एक आध जीने और दरवाजे शेष हैं वरना तो यहां का इतिहास तो आप खत्म ही जानिये।

शिक्षकों के रोके गए वेतन को आहरित करने की मांग

लोक पहल

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश के प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा कम उपस्थिति के कारण 161 विद्यालयों के स्टाफके रोके गये वेतन को आहरित किये जाने की मांग जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी से करते हुए अतिशीघ्र शिक्षकों द्वारा छात्र उपस्थिति बढ़ाने की बात कही है। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ का एक प्रतिनिधि मंडल जिला मंत्री देवेश बाजपेई के नेतृत्व में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रणवीर सिंह से मिला और बताया कि जनपद में डेंगू बुखार एवं प्रमुख त्योहारों के कारण गत माह में छात्र उपस्थित विद्यालय में काम रही लेकिन अब सभी टीचरों द्वारा विद्यालय क्षेत्र में डोर टू डोर अभिभावकों को संपर्क करके एवं बुलावा टोली बनाकर उपस्थिति बढ़ाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है इसलिए कम उपस्थिति के कारण 161 विद्यालय के स्टाफ का रोका गया वेतन आहरित करने की मांग की है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रतिनिधि मंडल को वेतन आहरित करने का अश्वासन दिया गया। प्रतिनिधि मंडल में जिला कोषाध्यक्ष रविंद्र पाल प्रजापति, मुनीश मिश्र, राजकुमार तिवारी, सौरभ गुप्ता, राहुल तोमर आदि थे।

/ सम्पादकीय /

ऑस्ट्रेलिया ने विश्वकप और भारत ने जीता दिल

क्रिकेट विश्वकप 2023 के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से भले ही टीम इंडिया हार गई हो, लेकिन फिर भी करोड़ों देशवासियों के दिलों को टीम ने जीत लिया। पूरे टूर्नामेंट में भारत ने शानदार प्रदर्शन किया। टीम इंडिया ने न सिर्फभारतीय क्रिकेट प्रेमियों बल्कि क्रिकेट दुनिया के दिग्गजों को भी ये कहने पर मजबूर कर दिया कि इस वर्ल्ड कप में सबसे मजबूत टीम भारत की है. मनोवैज्ञानिक रूप से भारत ने हर टीम को परास्त कर दिया था

जैसे टीम इंडिया चैंपियन है उसी तरह भारत के क्रिकेट प्रेमी चैंपियन हैं। क्रिकेट से हम भारतीय रोते हैं, हंसते हैं. क्रिकेट हमारी चाहत है। एक देश के तौर पर क्रिकेट की तरह हमें कुछ और नहीं जोड़ता। वो हर विकेट पर चियर और हर छक्के पर ताली, हमारी ऊर्जा कमाल की होती है।अपनी टीम को ये क्रिकेट प्रेमी कितना चाहते हैं। कहीं पूजा, कहीं हवन, कहीं दुआ, कहीं मन्नत। अहमदाबाद में खेले गए वर्ल्ड कप फाइनल का नतीजा देशवासियों को वह खुशी नहीं दे पाया जिसका करोड़ों आंखें इंतजार कर रही थीं। लेकिन यह क्रिकेट का ऐसा पहलू है, जो इस खेल को खेल बनाए रखता है। इसमें जीत-हार से आगे जाता है यह सवाल कि कौन खेला कैसा। और इस कसौटी पर देखें तो फाइनल मैच में ऑस्ट्रेलियाई टीम निश्चित रूप से अच्छा खेली, जिसका इनाम उसे जीत के रूप में मिला भी। लेकिन बात पूरे वर्ल्ड कप की करें तो टीम इंडिया की बराबरी में शायद ही कोई दूसरी टीम दिखेगी। 11 में से दस मुकाबले उसने न केवल जीते बल्कि अपने उत्कृष्ट खेल से तमाम खेल प्रेमियों को चकित करती रही। अपनी आंखों के सामने अपनी टीम को खेलते, खिलते और चमकते हुए शिखर की ओर बढ़ते देखना हर भारतीय के लिए आंखें जुड़ाने वाला अनुभव साबित हो रहा था। एक मैच की जीत-हार, भले वह फाइनल ही क्यों न हो, देशवासियों से उस अनुभव का रोमांच नहीं छीन सकती। जो विविधता इस टीम में दिख रही थी, वही भारत की भी विशिष्टता रही है। उस विविधता की चमक में ही देश की चमक छिपी हुई है।

देशवासियों के हर हिस्से और हर तबके के खून और पसीने से मिलकर बनी है यह टीम। फाइनल मैच का नतीजा इस तथ्य को नहीं बदल सकता कि रोहित शर्मा एक ऐसे कप्तान के रूप में उभरे हैं, जो हमेशा टीम को खुद से आगे रखता है। न ही यह तथ्य बदल सकता है कि विराट कोहली और मोहम्मद शमी ने खुद जीकर सिखाया है कि कैसे अपने खेल को निरंतर मांजते हुए अपना बेहतरीन प्रदर्षन पेष किया लेकिन इन तमाम उपलब्धियों के बीच एक देश के रूप में हमें इस वर्ल्ड कप से मिले कुछ उन सबकों को भी याद रखना होगा जो बताते हैं कि हममें कई बिंदुओं पर सुधार की जरूरत है। खासकर यह कि धर्म, जाति और क्षेत्र का चश्मा अक्सर हमारे क्रिकेट के प्यार को धूमिल कर देता है। चाहे वह अपने मोहम्मद शमी की किसी भूल से उपजी नाराजगी हो या पाकिस्तान जैसे देश की टीम के खिलाड़ियों के खिलाफकुछ लोगों की ओर से व्यक्त की गई भावना, फूहड़ प्रतिक्रिया क्रिकेट स्पिरिट को कमजोर करती है। उस स्पिरिट को जो खेल को खेल की तरह लेना और उसे सेलिब्रेट करना सिखाती है। कुछ लोग इसमें सट्टेबाजी का भी अंदेशा जता रहे हैं। चूंकि पहले कुछ मौकों पर ऐसा हो चुका है और उसके चलते कुछ भारतीय खिलाड़ियों पर गाज भी गिर चुकी है। क्रिकेट बोर्ड में राजनीतिक दखलंदाजी बढ़ने से भी भारतीय टीम के प्रदर्शन को लेकर आशंकाएं जताई जाती रही हैं। मगर इन तमाम आरोपों और आशंकाओं के पीछे भावनात्मक खीज अधिक कही जा सकती है। निस्संदेह भारतीय टीम का जीतना गौरव की बात होती, मगर इस हार का मूल्यांकन आस्ट्रेलियाई टीम के प्रदर्शन को सामने रख कर किया जाना चाहिए। खेल को खेल भावना से ही खेला और देखा जाना चाहिए, पक्षपातपूर्ण या सियासी नजर से नहीं।

सूर्य देव की आराधना को समर्पित है छठ पूजा व्रत

किशन भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

छठ सूर्य देव की पूजा को समर्पित पर्व है, प्रकृति से जुड़ा यह पर्व आध्यात्मिक चेतना जगाता है हम छठ पर्व की बेला पर खुशियों से सराबोर होकर नहाने की करें तो, छठ पूजा का त्योहार 17 नवंबर से शुरू हुआ। इस साल छठ पूजा 19 नवंबर को हुई। इस दिन डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया गया। 20 नवंबर को उगते सूर्य को अर्घ्य दिया गया और इसी के साथ छठ पूजा का समापन व व्रत पारण किया गया। छठ पर्व की शुरूआत नहाय-खाय के साथ होती है। इसके दूसरे दिन को खरना कहते हैं। इस दिन व्रती को पूरे दिन व्रत रखना होगा। शाम को व्रती महिलाएं खीर का प्रसाद बनाती हैं। छठ व्रत के तीसरे दिन सूर्य देव की पूजा की जाती है। इस दिन महिलाएं शाम के समय तालाब या नदी में जाकर सूर्य भगवान को अर्घ्य देती है। चौथे दिन सूर्य देव को जल देकर छठ पर्व का समापन किया जाता है। इस त्योहार को सबसे ज्यादा बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल में मनाया जाता है। साथ ही इसे नेपाल में भी मनाया जाता है। इस त्योहार को सूर्य षष्ठी के नाम से भी जाना जाता है। छठ पूजा का पर्व संतान के लिए रखा जाता है। छठ में 36 घंटे का निर्जला व्रत रखा जाता है।

छठ सूर्य देव की पूजा को समर्पित पर्व है। यह नदियों, तालाबों और पानी के अन्य स्रोतों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने का भी अवसर है। प्रकृति से जुड़ा यह पर्व आध्यात्मिक चेतना जगाता है और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करता है। छठ पूजा हमें अपने परिवेश को स्वच्छ रखने और अपने दैनिक जीवन में अनुशासन का पालन करने की याद दिलाती है।

छठ पर्व पर प्रसन्नता की बात करें तो खुलकर हंसना, मुस्कुराना, प्रसन्न रहना, मन की प्रसन्नता खुद सृजित की हुई दवा के समान है, क्योंकि इसमें सब दुख तो नष्ट होते हैं,जीव अपने कर्म में असफल नहीं होता। बुद्धि तुरंत स्थिर रहती है। सामाजिक प्रतिष्ठा और गुणों की सुगंध दूर तक जाती है एक अलग हस्मुख व्यक्तित्व की हमारी छाया हमारे अपने परिचितों सहयोगियों पर पड़ती है। प्रसन्नता हमारा ऐसा अनमोल खजाना है, जिसे जितना लूटाएंगे उतना ही बढ़ता चला जाएगा, खिलखिलाते चेहरे और प्रसन्नता की आंखों की चमक मनीषियों को दुर्लभ पूंजी है, क्योंकि प्रसन्नता सुकून से जीने की कुंजी है। यह खजाना तब बढ़ता है जब हम दूसरों की खुशियों में अपनी खुशी को समाहित करते हैं। हमें छोटी-छोटी चीजों में प्रसन्नता, सुख ढूंढने की कोशिश करनी चाहिए, विश्वसनीय मन के भाव की खुशी का भाव अभूतपूर्व सफलता और दूरगामी सकारात्मक

परिणाम होता है। आध्यात्मिकता, उदारता, परोपकार, सहनशीलता, सहिष्णुता इत्यादि मन की प्रसन्नता के प्रमुख स्त्रोतों में से कुछ हैं, जिनको जीवन में अपनाने की जरूरत को रेखांकित किया जा सकता है।

छठ के इस पावन पर्व पर मन की प्रसन्नता के गुण एवं लाभों की करें तो, प्रसन्नता तो व्यक्ति का मानसिक गुण है, जिसे व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन के अभ्यास में लाना होता है। प्रसन्नता व्यक्ति के अंतर्मन में छिपे उदासी, तृष्णा और कुंठाजनित मनोविकारों को सदा के लिए समाप्त कर देती है। वस्तुत: प्रसन्नता चुंबकीय शक्ति संपन्न एक विशिष्ट गुण है। प्रसन्नता दैवी वरदान तो है ही, यह व्यक्ति के जीवन की साधना भी है। व्यक्ति प्रसन्न रहने के लिए एक खिलाड़ी की भांति अपनी जीवन-शैली और दृष्टिकोण को अपना लेता है। उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता असफलता, जय-पराजय, और सुख-दुख उसके चिंतन का विषय नहीं होता। वह तो अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है। प्रसन्नता मानवों में पाई जाने वाली भावनाओं में सबसे सकारात्मक भावना है। इसके होने के विभिन्न कारण हो सकते हैं। अपनी इच्छाओं की पूर्ति से संतुष्ट होना। अपने दिन-रात के जीवन की गतिविधियों को अपनी इच्छाओं के अनुकूल पाना। किसी अचानक लाभ से लाभांवित होना। किसी जटिल समस्या का समाधान प्राप्त होना। ज्ञानीजन और अनुभवी बताते हैं कि प्रसन्नता जैसे दैवीय-वरदान से कुतर्की और षड्यंत्रकारी लोग सदैव वंचित रह जाते हैं। प्रसन्न व्यक्ति स्वयं को प्रसन्न रखकर दूसरों को भी प्रसन्न रखने की अद्भुत सामर्थ्य रखता है। प्रसन्नता को प्रभु-प्रदत्त संपदा समझने वाले व्यक्ति ही सदैव सुखी रहते हुए यशस्वी, मनस्वी, महान और पराक्रमी बनकर समाज और राष्ट्र के लिए आदर्श स्थापित करने में सक्षम हो सकते हैं। प्रसन्नता ही सुखी जीवन का मूल मंत्र है। प्रसन्नता हमारा अनमोल खजाना है। प्रसन्नता को जरूर लुटाइए फिर देखिए, उसका खजाना बढ़ता चला जाएगा। भलाई करना कर्त्तव्य नहीं, आनन्द है। क्योंकि वह प्रसन्नता को पोषित करता है। सबको प्रसन्न करने की शक्ति सब में नहीं होती । प्रसन्नता आत्मा को शक्ति प्रदान करती है । प्रसन्नतापूर्वक उठाया गया बोझ हल्का महसूस होता है। प्रसन्नता शब्द का प्रयोग मानसिक या भावनात्मक अवस्थाओं के संदर्भ में किया जाता है, जिसमें संतोष से लेकर तीव्र आनंद तक की सकारात्मक या सुखद भावनाएं शामिल हैं। इसका उपयोग जीवन संतुष्टि, व्यक्तिपरक कल्याण, यूडिमोनिया, उत्कर्ष और कल्याण के संदर्भ में भी किया जाता है इसलिए हर व्यक्ति ने इस गुण को अपने में समाहित कर जीवन को सफल बनाने के मंत्र को अपनाना चाहिए। छठ सूर्य देव की पूजा को समर्पित पर्व है, प्रकृति से जुड़ा यह पर्व आध्यात्मिक चेतना जगाता है। आओ त्योहारों के मौसम में छठ पर्व की बेला पर खुशियों से सराबोर होकर नहाए। आओ हंसियों की फुलझड़ियां जलाकर जिंदगी को महकाएं।

आपके मन का खेल है दुख भगाना

रानी प्रियंका वल्लरी
बहादुरगढ़ हरियाणा

सुख दिन हैं,दुख हैं रात घनी काली, है दर्द दीया में बाती का जलना! गोपाल सिंह नेपाली जी की एक इस पंक्ति में सुख - दुख दर्द तीनों का समावेश हैं। सुख- दुख तो हमारे अस्तित्व का हिस्सा हैं. यह हमारी इच्छाओं अपेक्षाओं से जन्मा हैं। भला इससे क्या घबराना यह मोह -प्रेम का बंधन हैं। फिर भी किसी बात को स्वीकारना सहज नहीं होता। हर आदमी की चाहत दुख से मुक्ति की होती है तो इस मुक्ति के लिए जरूरी है पहले दुख के कारणों को जानना।

देखा जाए तो दुख के पाँच चरण होते हैं: अस्वीकृति, क्रोध, बार्गेनिंग, डिप्रेशन और स्वीकृति। जब हम आप किसी तल्ख से सामना कर रहे होते हैं हम सब इन पाँच चरणों से गुजर रहे होते हैं। हालाँकि कुछ लोगों के दुख होने की प्रक्रिया कुछ अलग होती हैं। जब दुख के साथ स्ट्रेस, ट्रामा और भी जुड़ा होता हैं तो स्थिति गंभीर हो जाती हैं जिससे मेंटल -फिजिकल हेल्थ प्रभावित होती हैं। कार्टिसोल और एड्रेनलाइन जैसे स्ट्रेम हार्मोन्स रिलीज होते हैं और भूख नींद का दिनचर्या बिगड़ जाता है। अगर लंबे समय तक यह चलता रहा तो व्यक्ति की रोजमर्रा की जिंदगी पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसके कामकाज से निजी जीवन से तक सब अस्त व्यस्त हो जाता है। दुख की स्थिति में व्यक्ति कई तरह के मनोभावों से होकर गुजरता हैं, लेकिन जब इसमें ट्रामा से जुड़ जाता है, तो उसकी स्थिति बिगड़ने लगती हैं क्योंकि दुख के साथ शॉक, असुरक्षा और भय भी जुड़ा होता हैं। कुछ होने या छूट जाने का दुख लंबा रहता हैं यह स्वभाविक प्रक्रिया हैं।

अस्वीकृति: इस स्थिति में बाहरी तौर पर भूलने, ध्यान भटकने, अजीबोगरीब वर्ताव हमेशा व्यस्त दिखने या रहने की जबरन खुद को दर्शाने की कोशिश करता हैं। कई बार व्यक्ति शॉक में होता हैं। उसके आसपास सब शून्य नजर आता हैं। वह किसी भी निर्णय तक पहुँचने में सामर्थ्य नहीं हो पाता हैं।

क्रोध: क्रोध में ऐसे लोग आकर्मक हो जाते हैं। क्रोध इंसान में इतना बढ़ जाता है वह हर बात पर चिड़चिड़ा हो जाता उसके सोच नकारात्मक होने लगती हैं वह सब कुछ पकड़ कर रखना चाहता हैं,

उसे छूटने बिखरने का भय बन जाता है। उसे हर छोटी छोटी बातों में अकेलपान महसूस होने लगता है उसके अंदर झगड़ने की प्रवृति बढ़ जाती हैं। वह आवेश में आकर किसी से हाथापाई कर सकता हैं। कई बार लोग नशे के शिकार हो जाते हैं. उसके मन मे कुंठा, अवसाद, अधैर्य,शर्मिंदगी और बदले की भावना बढ़ जाती हैं।

बार्गेनिंग: अतीत या भविष्य की किसी संभावित घटना को लेकर ओवरथिंकिंग, बुरा घटने की कल्पना, तुलना भविष्य में बहुत बुरा घटने की कल्पना करना। किसी के प्रति तुरंत जजमेंटल हो जाना, ये सारे अपराध, बोध, भय, बेचौनी और असुरक्षा पैदा करती हैं। वह अकारण दूसरों पर दोषारोपण भी मढ़ सकता हैं।

डिप्रेशन: इस स्थिति में व्यक्ति सुस्त और ऊर्जाहीन हो जाता हैं। भूख नींद का साइकल बिगड़ जाता हैं। उसे मोटिवेशन की कमी महसूस होने लगता हैं। हर छोटी छोटी बातों में घबराना, रोना आदत सा बन जाता हैं। वह हर वक्त अपने को अकेला, दुख, निराशा, हताशा के काले बादल में घिरा रहता हैं।

स्वीकार्यता: यह अंतिम चरण है, जिसमे मनुष्य अपने हर गलत सही बातों को मानना स्वीकार कर लेता हैं। यहां तक पहुँचते पहुँचते व्यक्ति व्यवहार संयत होने लगता हैं। किसी बात को स्वीकारना सहज नहीं होता। स्वीकार्यता का अर्थ हैं व्यक्ति में समझ पैदा हो रहा है। घिरे हुए स्थितियों से संघर्ष कर रहा हैं। यथार्थ से जूझने की क्षमता अपने अंदर जागृत कर रहा हैं। पर मेरा मानना हैं व्यक्ति खुद को वक्त दें, बातों को शेयर करें, बुरा सुनने देखने करने से बचे, सेल्फकेयर करें, बातों को स्वीकारना सीखें, दूसरों की भी सुनें। खुद को यह मौका दें कि अपनी फिलिंग्स को समझ सके, रोएं, सोचे, शेयर करें, काउंसलर से मिले, इस पीड़ा को कम होने के लिए वक्त दें। बातें उनसे शेयर करें जो उन्हें समझे, अपने ट्रेस को कम करें। बाहर घूमें, पौधों के देख रेख करें। पॉजिटिव मुवी देखें, अपने मन पसंद गीत सुनें, प्रेरणा मिलने वाले लेख साहित्य पढ़ें, अवसाद वाले बातों से छत्तीस का आंकड़ा रखे।

किसी सदस्य या दोस्त के बारे में ऐसा महसूस होता हैं तो देर ना करते हुए तुरंत काउंसलर से मिले,क्योंकि जीतनी देर करेंगे वह नुकसानदेह होगा। इन नुस्खों को आजमा कर देखें आपकी मानसिक हालत ठीक रह सकती हैं।

भारत में शिक्षा व्यवस्था-प्राचीन काल से वर्तमान तक

धर्मवीर सिंह
शाहजहांपुर

शिक्षा व्यवहार में परिमार्जन है, बीवी मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। वह सब शिक्षा है। विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इसको परिभाषित किया है। शिक्षा के तीन प्रकार है औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक शिक्षा। ये तीनों मिलकर शिक्षा व्यवस्था को समग्रता प्रदान करती है। भारतीय शिक्षा पद्धति का प्रारंभ वैदिक काल से होता है वैदिक कालीन, शिक्षा वेदों पर आधारित थी। वह स्थान जहां पर शिक्षा संचालित होती थी गुरूकुल के नाम से जाना जाता था। प्रकृति की गोद में नदी अथवा तालाब के किनारे एक गुरू के सानिध्य में कई शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे शिक्षा संस्कार प्रधान थी कुछ संस्कार शिक्षा से संबंधित थे यथा विद्यारंभ संस्कार, उपनयन संस्कार, समावर्तन संस्कार आदि। शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी। गुरू शिष्य के संबंध मधुर थे परन्तु इस समय की शिक्षा लोकतांत्रिक नहीं थी अत: ऊपर के तीनों वर्ण ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे स्त्रियां भी उपेक्षित थी ये कुछ इस समय की शिक्षा प्रणाली के दोष थे।

वौद्ध कालीन शिक्षा और धर्म वैदिक धर्म के प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हुए थे फलत: इस काल की शिक्षा प्रणाली वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के सापेक्ष लोकतांत्रिक थी सभी के लिए शिक्षा के द्वार खुले हुए थे बुद्ध ने ना चाहते हुए भी स्त्रियों को भी वौद्ध संघ के दरवाजे खोल दिये। इस काल की भी शिक्षा प्रणाली संस्कार प्रधान की यथा प्रारंभिक शिक्षा के लिए पावज्जा संस्कार होता था वौद्ध संघ में प्रवेश को उपसम्पदा कहा जाता था लेकिन शनै शनै वौद्ध धम्म में बुराइयां घर कर गयी। वौद्ध मठों ने अपरिग्रह के सिद्धांत को भुला दिया। मठ धन के जखीरा बन गये। फलत: विदेशी आक्रांताओं ने आक्रमण किये, इन्हें लूटा क्षतविक्षत किया। अहिंसा के पुजारी इस धर्म के लोग प्रतिरोध न कर सके। अत: वौद्ध धर्म और शिक्षा इस देश से लगभग समाप्त हो गये।

मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था को मुस्लिम कालीन शिक्षा व्यवस्था के नाम से जाना जाता है चूंकि मुस्लिम इस समय भारत देश के शासक थे इस काल की भी शिक्षा व्यवस्था संस्कार प्रधान थी। विद्या का आरंभ बिस्मिल्लाह खानी संस्कार से होता था जब बालक की उम्र 4 वर्ष 4 माह 4 दिन हो जाती थी तब यह संस्कार कराया जाता था। इस काल की शिक्षा व्यवस्था मकतब, और मदरसा में संचालित होती थी। मकतब प्रारंभिक शिक्षा के और मदरसा उच्च शिक्षा के केन्द्र थे। इस काल की शिक्षा धार्मिक थी। उद्देष्य था इस्लाम का प्रचार प्रसार। अत: इस काल की शिक्षा धर्म विशेष पर आधारित थी। इस्लाम के भारत में पतन के साथ यह शिक्षा व्यवस्था भी धर्म विशेष तक सीमित हो गयी।

मुस्लिम काल के बाद अगला काल ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली का है क्योंकि यह काल ब्रिटिश का था क्योंकि भारत इस समय इनका उपनिवेश था अत: भारत में शासन व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात इन्होंने किया। इसमें योगदान रहा लार्ड मैकाले का। ब्रिटिश काल में शिक्षा के विकास के क्रम में अनेक आयोग एवं समिति गठित किये गये यथा 1854 वुड डिस्पैच 1882 हंटर आयोग, 1917 सैडलर आयोग1929 हरतोग समिति, 1944 सार्जेंट प्लान, 1948 विश्वविद्यालय आयोग, 1964 कोठारी आयोग, 1968 की शिक्षा नीति, 1986 की नई शिक्षा नीति, वर्तमान में नई शिक्षा नीति 2020 लागू है। इन नीतियों और आयोगों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को नया आयाम दिया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमारे लोकतांत्रिक गणराज्य की वर्तमान आवश्यकताओं और भारत की एक विकसित राष्ट्र बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। ऐसी हम आशा करते है।

प्रेम

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

कुछ पल बैठो पास हमारे, तुमसे कुछ मन की कह पाऊँ।
मेरे दीवानेपन की हद, समझ सको तो कुछ बतलाऊँ।
मीलों दूर किंतु मुझको यूँ
लगता मेरे पास खड़े हो।
झुकी-झुकी सी नजर तुम्हारी
मेरे हाथों को पकड़े हो।

लगने को तो लगा कि जैसे, सिहर उठा हूँ छूकर तुमको,
किंतु दूरियों की सच्चाई, तुम्हीं कहो कैसे झुठलाऊँ।
जब-जब लिखने बैठा कुछ भी
लगा पीठ पीछे तुम छिपकर।
मेरे लिखने से पहले ही
पढ़ लेते हो अक्षर-अक्षर।

बिना कहे तुम जान चुके हो, मेरे मन की सारी बातें,
कब तक ये दूरियां समेटे, अलिखित गीतों को मैं गाऊँ।
उषाकाल के सूरज हो तुम
रात चांदनी के चन्दा हो।
सुन्दरतम यह सृष्टि तुम्हीं से
आँगन की रजनीगंधा हो।

महक रहे हो सांसों में तुम, धड़क रहे हो हर धड़कन में,
मधुर मिलन की अभिलाषाएं, बोलो कब तक और छिपाऊँ।

गर्वित स्वर

लघुकथा

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
बालोद, छत्तीसगढ़

'आपके कितने बच्चे हैं भाई साहब ?' एक शख्स ने ट्रेन में अपनी बगल वाली सीट पर बैठे एक दूसरे शख्स से पूछा। 'मेरी तीन लड़कियाँ हैं आदरणीय।' दूसरे शख्स के जवाब में बड़ी गजब की मुस्कान थी-और आपके ?' 'चार लड़के हैं मेरे।' 'क्या-क्या करते हैं ?'

'तीनों पढ़ रहे हैं। एक इंजीनियरिंग कर रहा है। दूसरा एमबीबीएस में है। तीसरे नंबर का चार्टर्ड एकाउंट की पढ़ाई कर रहा है।' चौथे...कहते-कहते मुँह बनाते हुए वे चुप हो गये। 'चौथे वाले के बारे में नहीं बताया आपने ?' 'बीए सेंकड ईयर में है।' बताते हुए उन्हें अच्छा नहीं लगा। फिर उन्होंने और पूछ डाला- 'और आपकी लड़कियाँ ?' 'मेरी तीनों लड़कियाँ बीए कर रही हैं।' गर्वित स्वर में जवाब था।

विकल्प

बाल लघुकथा

व्यग्र पाण्डे
गंगापुर सिटी राजस्थान

दीपावली कुछ दिनों बाद आने बाली थी पर अबकी बार मौसम भी कुछ विचित्र सा गर्मी लिए हुए था साथ ही वायु का प्रदुषित होना भी दुविधा का कारण बना हुआ था। वायु प्रदूषण की भयाभयता का अंदाजा लगाते हुए सरकार की मंशा के अनुरूप स्थानीय प्रशासन ने भी पटाखों की दुकान व पटाखे चलाने पर सख्ती से पाबंदी लगा दी थी। बच्चों ने जब ये सुना कि अबकी बार दीपावली पर पटाखे चलाये नहीं जायेंगे तो उन्हें बड़ा ही बुरा लगा।

आज दीपावली की सांझ, सभी बच्चे मायूस, तब ही अचानक पड़ौस के अंकल जी की छत से छोटे-छोटे फ्टाखों के चलने सी आवाज आई। ये सुन सभी बच्चे अपनी-अपनी छतों पर चँढ़कर देखने लगे। तो वो देखते हैं कि मोनू और उसकी छोटी बहन मच्छर मारने के रेकिट से मच्छर मार रहे हैं और उस आवाज से पटाखों का सा आनंद ले रहे हैं। ये खबर तत्काल ही पूरे शहर में फैल गई, देखते ही देखते सभी बच्चे अपनी-अपनी छतों पर रेकिट लेकर चँढ़ गये और एक अलग ही अंदाज से दीपावली मनाने लगे। लगता आज मच्छरों की शामत आ गयी थी पर बच्चों को फ्टाखों का विकल्प मिल चुका था कुछ शरारती बच्चे तो गली मोहल्लों की सड़कों पर भी दीपावली मनाते देखे गये।

देह सो गयी है

हामी भर-भरकर
उसकी आवाज खो गयी है।
बोलेगा तो शब्द नहीं
विनती ही बोलेगा।
मालिक के उढ़के किवाड़
डर-डरकर खोलेगा।
नस-नस में किसकी दहाड़
कँपकँपी बो गयी है?
परी नहीं, उसके सपनों में
थाली आती है।
वह जूठन को नहीं, उसे खुद
जूठन खाती है।
रगड़-रगड़कर फर्श
हथेली सुर्ख हो गयी है।
रातों में अकसर थकान से
वह कराहता है।
कभी-कभी चुपके से कोई
गेंद चाहता है।
कोसों दूर नींद है, लेकिन
देह सो गयी है।

सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी
लखनऊ

हर घर दीप जले कहीं अँधेरा ना हो

हर घर दीप जले कहीं अँधेरा ना हो।
घर हो रौशन कोई घर अँधेरा ना हो।
दीप हर घर जले कोई बे घर ना हो॥
बड़े मासूम है बच्चे जो बाजार में है,
इन कन्धों पर कोई जिम्मेदारी ना हो।
हर दिल में प्रेम का प्रकाश उपजे है,
किसी अपनों से कोई रंजिश ना हो।
दुश्मनी लाख सही पर प्रेम रखना प्रिय,
एक दूसरे के दिल में नफरत ना हो।
दीप जलते सदा मुस्कुराते रहे सभी,
कभी जीवन में किसी से अनबन ना हो।

प्रभात गौर प्रयागराज

मानवीय मशीन

कोई पूछता है,
कैसे हो ?
हम तुरंत कह देते है,
सब ठीक है।
हमारे पूछने पर भी ,
वो भी सब ठीक ही बताता है।
लेकिन कुछ भी ठीक,
होता तो नहीं है।
काश हम एक दूसरे को
अपना सही हाल बता पाते।
महज औपचरिकता से
थोड़ा आगे बड़ पाते।
हमारा पूछना भी यांत्रिक होता है,
और उसका बताना भी।
हम सब एक मानवीय मशीन है।
न किसी को हमारे हाल से मतलब होता है,
ना हमें किसी के हाल से।
दो मशीने आपस में मिलती हैं,
और यंत्रवत काम चलता है।
दिल में जमा जो गम का पर्वत है,
वह कब कहां भला पिघलता है।

गिरीश गुप्ता, बड़ौदा, गुजरात

हम सदा दुख के ही वाचक रहे

हम सदा जीवन-तिमिर में दुःख के ही वाचक रहे,
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे॥
एक मूरत के चरण का पुष्प हर कुम्हला गया
कर्म हम वह कर न पाए फूल हो जिससे नया
पुण्य ही करते रहें पर पाप सारे बढ़ गये
पुष्प पाने को डगर में कंटकों को गढ़ गये
पुण्य करके भी सदा हम कर्म से पातक रहे
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे॥
दीर्घ जीवन,अल्प जीवन का न कोई मोल है
दो पलों का प्रेम पाया जन्म वह अनमोल है
एक जल धारा में बहती वस्तु के जैसे कहीं
है हमारा स्थान सच में देखिए तो अब वहीं
स्वाति की बूंदें गिरी पर हम कहाँ चातक रहे।
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे॥
मृत्यु आने तक भी जीवन अब कहाँ आसान है
तन तो केवल भूमि पर निर्जीव-सा सामान है
साधनों की चाह में ही हम असाधारण हुये
लोभ लालच की तपन में हम सभी चारण हुये
हम स्वयं ही या स्वयं के साथ ही घातक हुये।
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे॥

डा. अनुराग सिंह गोंदिया महाराष्ट्र

हम न करब छठ ब्रतीया

है सजना हम न करब छठ ब्रतीया,
कि हमरा के फरकट लागे,
है सजना हम न करब छठ ब्रतीया,
कि हमरा के फरकट लागे,

है सजनी किए तू काइले है मन में विचार,
कि तोहरा के फरकट लागे,
ई तो है आस्था के त्योहार,
कि घरे ऋघरे होवत है छठ के ब्रतिया,
एकरा में करेलू ना कोई अकेलेन्न काज,
कि मिली जुली होवत है छठ के ब्रतिया

है सजना हम न करब छठ ब्रतिया,
धना हमरा नहियो ओ लगले जुगाड,
कि डाला फलवा खरीदेम कहां से,
है सजनी किए तू कायले है मन में विचार,
कि दीनानाथ देहथुन धना आपार,
लगें.. थून जुगाड आपार,
हंसी-खुशी तू खरीदम डाला के फलवा हजार,

है सजना हम न करब छठ ब्रतिया
कि गोदी में खेलत बालक हमार,
एकरा के छोड़ के कैसे हम काजा करब,
है सजनी किए तू काईले मन में विचार,
कि दीनानाथ तोहरे बालक्का के खातिर,
कि दीनानाथ भेज दे थून गांव से,
केते हो तोहार संगी साथी,
हंसी खुशी ओ खेलते तोहार बालक्का हो सजनी,
कि मिली जुली कर दे थून तोहर
ओ संगी साथी छठ के हो काजा हजार,

है सजना हमू करब छठ ब्रतीय,
कि दीनानाथ लगाएथीन बेड़ा ओ पर,
है सजनी कर लिए तू छठ ब्रतिया,
कि दीनानाथ लगे थून बेड़ा हो पार,

रीना सोनालिका
बोकारो, झारखण्ड

अनुभव नहीं

मुस्कानों से सदा छले हो।
कलियों पर अलि-सा फिसले हो।
कालीनों पर पग रखते हो
कंटक-पथ पर कहाँ चले हो।
ज्योति-विरोधी सोच तुम्हारा
रहते छुपकर दीप तले हो।
आया मित्र द्वार पर जब-जब
घर के बाहर कब निकले हो।
अनुभव नहीं अभावों का है
सुविधाओं में बढ़े-पले हो।
अनाचार का पक्ष ले रहे
किस साँचे में बंधु! ढले हो।
चाह रहे हो झरना बनना
हिमखण्डों-सा कब पिघले हो।
नदी किनारे व्यर्थ बैठकर
जल-जीवों को बहुत खले हो।
अंतस में कालिमा भरी है
ऊपर से दिखते उजले हो।

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
लखनऊ

लहालहोटो से गुलजार है सोशल मीडिया

रेखा शाह आरबी
बलिया उ.प्र.

हास्य व्यंग्य

भगवान जाने सोशल मीडिया प्लेटफार्म बनाने वालो ने क्या सोचकर सोशल मीडिया बनाया था। जरूर जीवन से उकताये हुए प्राणी होगे। जिनकी दुनिया बेरंग ,बेनुर, और स्वाद में कड़वे करेले की तरह होगी। क्योंकि साधारण मनुष्यो के वश की बात नही है कि इतनी तिकड़म वाली चीज बना सके । ऐसी चीज बनाने वाले व्यक्ति बड़े ही जटिल बुद्धि प्राणी होते हैं। साधारण लोगों का क्या है वह बेचारे तो दाल रोटी से ऊपर कुछ सोच ही नहीं पाते हैं। जरूर सोशल मीडिया बनाने वाले ने अपनी दुनिया में तड़का लगाने के लिए इसे बनाया होगा। और तड़का भी ऐसा लगाया कि भर भर कर इसमें उसने मसाले डालें।

और बनाया तो बनाया इसमें ऐसी-ऐसी सुविधा दिया की देशभर के अधिकांश ठरकदासो को अपनी तरफ चुंबक की तरह खींचकर एक जगह इकट्ठा भी कर दिया। सोशल मीडिया के महान निर्माता ने अपने जीवन का एक बड़ा ही नेक काम कर डाला ठरकदासो के हित में..इनकी बेरंग, बेनुर दुनिया को रंगीन बना दिया। सच मान लीजिए आज यह अगर सोशल मीडिया नहीं होता तो यह दो-चार बच्चों के पिता भी अपने प्यार को तरसती आत्मा की तृप्ति के लिए कहा पर घूमते और भटकते.. और इनको कहां मोक्ष प्राप्त होता। कहां अपनी दुखद गाथा व्यथा सुनाते। सोशल मीडिया के अलावा ऐसा तो कोई प्लेनेट भी नहीं है। और उनकी अतृप्त आत्माएं ऐसे ही तड़पती और भटकती रह जाती।

रियल दुनिया में तो अपनी हरकतों की वजह से यह ठरकदास दो चार बार लात जूते खा चुके होते हैं। पर अभी तक सोशल मीडिया वालों ने अपने प्लेटफार्म पर ऐसी कोई सुविधा नहीं दी है कि ऐसे कर्मकांड करने पर उन्हें लात जूते से सम्मानित किया जाए। जबकि उन्हें देना चाहिए था। सबसे ज्यादा इस प्लेटफार्म पर ही ऐसे ऑप्शन की जरूरत थी।

हकीकत में सोशल मीडिया के निर्माता को एक सर्वे करना चाहिए और उनको महिलाओं से पूछना चाहिए.. कि यह लात जूते देने वाला ऑप्शन जरूरी है कि नहीं है?? यकीन मानिए 1 में से 1 महिलाएं इसको जरूरी मानेंगी। जूते तो इंसान को कहीं भी खाना चाहिए.. बस उसमें जूते खाने वाले गुण होने

चाहिए। तो बस यहां भी खाते और उनके मीठे जाल में फंसने वाली मूर्ख बालाएं और महिलाएं जिनको घरों में पति और भाई तू तड़ाक से बात करने वाले, लताड़ने और डांट लगा देने वाले रहते हैं। उन बालाओ और महिलाओ को यह प्लेटफॉर्म नहीं होते तो इनको जी- जी कहकर कैसे जाल में फंसाया जाता। कहा अपने परिवार वालो की करेले जैसी डांट और कहा इनकी जलेबी के जैसे रसभरी बात ...फंसने से कौन बचा सकता है। एक तो यह ठरकदास अपने अकाउंट के वॉल पर ऐसी ऐसी साधु महात्माओं वाली पोस्ट शेयर करते हैं कि उनको महिला वर्ग साधु महात्मा ही मान लेती हैं। उसके बाद वह अपनी महिला मित्र के पोस्ट पर तब तक लहालहोट होते रहते हैं जब तक की इनको अपना तीर्थ स्थल यानी इनबॉक्स में एंट्री नहीं मिल जाती है। इनबॉक्स में पहुंचते ही इनकी साधना और यात्रा पूरी हो जाती है और अगले यात्रा की तैयारी करने लगते हैं। जीवन तो बस चलने का नाम है यह लोग इस अवधारणा पर पूरी तरह सहमत होते हैं।

इन लहालहोटो की सबसे बड़ी खूबी होती है यह अपने आप को सबसे बड़े वाले देशभक्त भी बताते हैं। उनके अकाउंट के पोस्ट ऐसा ही कहते हैं। उनके अकाउंट को खंगाल लीजिए तो पता चलेगा देश तो बस इनसे ही सुरक्षित है। बस इनको बॉर्डर पर खड़ा कर दीजिए और उनके हाथ में बंदूक दे दीजिए। देश के दुश्मनों का तो सत्यानाश कर देंगे ऐसे जोश खरोश वाले पोस्ट यह प्रतिदिन बिना नागा किए डालते हैं। त्यौहार तो उनके लिए वरदान बनकर आते हैं। सबसे बड़ी समस्या होती है । यह इनबॉक्स तक पहली बार पहुंचे कैसे जिसके लिए त्योहारी सीजन सबसे मुफीद होता है। शुभकामनाएं देने के बहाने आवागमन का मार्ग खुल जाता है। आगे की जमीन कैसे तैयार करनी है यह बखूबी जानते हैं और कर लेते हैं। लेकिन एक काम सोशल मीडिया बनाने वालों ने गलत कर दिया इसमे में भले ही लात जूते चलाने का ऑप्शन नहीं है। लेकिन ब्लॉक रुपी जूते मारने का ऑप्शन बड़ा मशहूर है। और खूब मारा भी जाता है।

हम आप और रसोई

रेसिपी

च्यवनप्राश

अश्विनी कुमारों ने च्यवन ऋषि के लिए च्यवनप्राश बनाया, जिसके सेवन के बाद ऋषि च्यवन ने फिर से अपने यौवन को प्राप्त कर लिया। इसलिए च्यवन ऋषि के नाम पर ही च्यवनप्राश का नाम पड़ा है। सर्दियों का मौसम आते ही कुदरत की नेअमते हम पर बरसती हैं तो हमे भी इस मौसम में मिलने वाले फल और सब्जियों का हमारे दैनिक आहार में रोजाना सेवन करना चाहिए और जितना हो सके हमारे शरीर को चुस्त और दुरुस्त कर सकते हैं। आंवला सर्दी के मौसम में कुछ सीमित समय तक ही मिलता है तो मैंने आंवला से ही कुछ खास व्यंजन बनाई है, जो हैं 'च्यवनप्राष' आज कल हमारे खानपान के तौर तरीको में काफी बदलाव आया है। इम्युनिटी पॉवर को बढ़ाने के लिए बाजार में उपलब्ध च्यवनप्राष कई कंपनीयो के मौजूद है लेकिन उन में कई तरह की मिलावट पाई गई है लेकिन आप घर पर ही आसान तरीके से च्यवनप्राष बना सकते हो।

आंवला: विटामिन सी और लोहतत्व से भरपूर है वेदकाल में इसका उपयोग ज्यादा होता था।

रज़िया लोहानी
व्यारा, गुजरात

विधि

सबसे पहले सभी मसालों को साफकरके पाउडर बना लीजिए और छान लें। एक बर्तन में आंवला को पानी में उबाल लें। अब आंवला को ठंडा होने दें और फिर गुठलियां अलग करके आवले को छान कर मावा बनाएं। अब एक लोहे की कड़ाई में घी ले कर आंवला को बराबर पका लें। आंवला घी में भूनकर मिसरी को कूट कर डालिए और फिर गाढ़ा होने तक पकाएं। अब सभी तैयार किए गए मसालों को मिक्स कर लें और गाढ़ा होने तक पकाएं। अब केसर को मिक्स करें और पके हुए आंवला के मिश्रण को ठंडा होने दें। ठंडा होने पर इसमें शहद मिलाकर बोतल में भरकर रखें और सेवन करें।

सामग्री........

1 किलोग्राम - आंवला
150 ग्राम घी
300 ग्राम शहद
750 ग्राम मिसरी
25 ग्राम वंशलोचन पाउडर
10 ग्राम जावंत्री
10 ग्राम दालचीनी
10 ग्राम बड़ी इलायची
10 ग्राम छोटी इलायची
10 ग्राम लॉन्गपैपर
10 ग्राम छोटी हरड़
10 ग्राम सोंठ
10 ग्राम शतावरी
10 ग्राम नागकेसर
10 ग्राम अश्वगंधा
10 ग्राम लवंग
10 ग्राम कालीमिर्च
10 ग्राम तेजपत्ता
10 ग्राम गंठोड़ा पाउडर
1 ग्राम केसर

आराधना

हो जाओ देव अब प्रकट
राह कब से पूजारन तक रही
जल में खड़ी है हाथ जोड़े
आदि नाम माला जप रही
फैलाओ अपना तेज जग में
सब रोग व्याधि दूर हो
सुख समृद्धि की फैले धूप
मुश्किल सभी की दूर हो
स्वीकारो देव यह अर्घ्य जल
आस्था भरी यह जल गगरी
हो सफल पूजा आराधना
प्रार्थना है ऐसी बस हमरी
आशीष रखना हम पर अपना
करती रहूं हर प्रण पूरी
जल दूध अर्पण करूं मैं
ऐसे सालों साल निरंतर ही॥

स्मिता, बोकारो झारखण्ड

गज़ल

उनसे बिछड़े तो जाना है।
मुश्किल अपना जी पाना है।
इतना कहकर छोड़ा उसने,
ये आशिक तो दीवाना है।
क्या कहना उनकी आंखों का,
चलता फिरता मयखाना है।
सुख दु:ख इस जीवन का हिस्सा,
इक जाना है इक आना है।
शम्मा बस होती है रौशन,
जलता लेकिन परवाना है।
मेरे गम की चर्चा सबमें,
एक वही बस अंजाना है।
सच पूछो तो दिल का कमरा,
'पारस' तुम बिन वीराना है।

विकास शर्मा 'पारस'
शाहजहांपुर

गज़ल

उसकी नजरों से न छुप पाया जिया साहब कुछ
देखने वाला सुनो देख रहा है सब कुछ

देखिए बात कहीं आगे बढ़ेगी अब कुछ
खुल रहे हैं जो मेरे जिक्र पे उनके लब कुछ

कब ये चाहा है कि मिल जाये मुझे ही सबकुछ
ये तमन्ना है कि मिल जाये मुझे यारब कुछ

दुश्मनी इतनी बुरी चीज नहीं है यारो
हों मगर कायदे कुछ और जरा से ढब कुछ

जिन्दगी बीत गई आधी मगर कुछ न हुआ
मैं तो अब हार चुका हूँ तू ही दिखा करतब कुछ

चाँद सूरज भी हुए खाक जलन से उसकी
एक जुगनू ने बिखेरी है चमक जब जब कुछ

सुभाष पाठक 'ज़िया'
शिवपुरी मध्य प्रदेश

विवशता

लघुकथा

मीरा जैन
उज्जैन

'चलिये पिताजी ! आपको खांसी बहुत हो रही है डाक्टर को दिखा लाऊँ।' महिनो बात नही करने वाले बेटे को आज अचानक इतना मेहरबान देख मोतीलालजी हतप्रभ थे जो भी हो मोतीलालजी झटपट तैयार हो खुशी खुशी सुनील के साथ चल दिये। आज ही नहीं ये पूछ परख का सिलसिला अनवरत जारी था जिसे देख सीमा अंदर तक विचलित थी कहां ससुर जी को वृद्धाश्रम पहुंचाने की तैयारी थी कहां ये तिमारदारी ताना मारते हुए आखिर कर सीमा ने पूछ ही लिया- 'क्यो जी,! अचानक पिताजी पर इतना प्यार क्यो उमड़ आया मै भी तो जानू ?' पहले तो सुनील टालता रहा जब सीमा जिद पर अड़ गई तो सुनील ने अपनी विवशता कुछ यूं जाहिर की- 'सीमा ! बात दरअसल यह है कि कुछ दिनों पूर्व मै अपनी जन्म कुन्डली लेकर शहर मे पधारे प्रकांड ज्योतिषाचार्य के पास गया और अपनी उम्र आदि के बारे मे जानकारी चाही, तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'बेटा ! तुम खुश किस्मत हो तुम्हारी उम्र भी तुम्हारे पिताजी के जितनी ही होगी और जीवन भी हू ब हू वैसा ही होगा जैसा तुम्हारे पिताजी का रहेगा।'

जनक दुलारी

धरा की पुत्री अविचल नारी
आ पड़ी थी विपदा बहू सारी
संग राघव के बन को चली
पतिव्रता महल छोड़ चली
वन जीवन में संकट भारी
चली जानकी संग रघुराई
हर ले गया राक्षस राजा
दु:ख दिए पाने के काजा
तृण ओट से शील बचाया
राक्षस की शक्ति ठुकराया
नारी शक्ति का रूप दिखाया
सति ने अपना ओज बढ़ाया
बचाने आए अवध बिहारी
बच्चा ले आए जनक दुलारी

जयश्री बिर्मि, अहमदाबाद

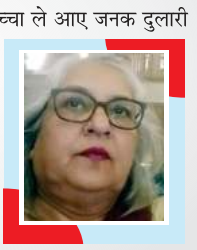

इजराइल और हमास

अंकुर त्रिपाठी 'विमुक्त'
शाहजहांपुर

सत्याग्रह का स्वरुप अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में कैसा होगा ? सत्याग्रह का अर्थ है सत्य हेतु आग्रह करना अर्थात अपनी सत्य बात हेतु विनम्रता के साथ सत्ता- सिंघासन-वरिष्ठ व्यक्ति या संस्था के समक्ष आग्रह करना ही सत्याग्रह को परिभाषित करता है।

सत्याग्रह का अर्थ किन्ही मायनो में याचना नहीं है यह एक सहजता व शालीनता के साथ अपनी बात रखने का वह मार्ग है जहां हिंसा का कोई स्थान नहीं है द्य सत्याग्रह के मार्ग को सर्वप्रथम गांधी जी ने उन्नीसवी शताब्दी में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों के रक्षण हेतु सत्याग्रह के मार्ग को चुना था। देश की आजादी में भी विभिन्न सत्याग्रही आंदोलनों की अपनी उपयोगिता सिद्ध होती है। विभिन्न देशों ने महात्मा गांधी जी के सिद्धांतो को हूबहू स्वीकार करने का प्रयास किया व उसे स्वीकारा भी। मार्टिन लूथर किंग से लेकर इटली के डैनिलो डोलची के सत्याग्रह की कहानी किसको रोमांचित नहीं कर जाती। ये सारे प्रयास भले ही सत्याग्रह की कसौटी पर खरे न उतरते हों, परंतु ये शांति और अहिंसा की दिशा में एक कदम अवश्य हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह के सकारात्मक परिणाम स्पष्ट दिखाई देते है व उसकी उपयोगिता भी सिद्ध होती है, विचारणीय यह है कि क्या सत्याग्रह के यही सकारात्मक परिणाम अंतर्राष्ट्रीय विषयो पर भी उतने ही प्रभावी रहेंगे जितने राष्ट्रीय स्तर पर रहे है या रहते है। इस सम्बन्ध में आचार्य विनोबा भावे ने अपने स्पष्ट विचार दिए है जो कि चिंतन योग्य है। इस विषय में आचार्य विनोबा कहते हैं - मान लीजिए, आक्रमणकारी हमारे गांव में घुस जाता है, तो मैं कहूंगा कि तुम प्रेम से आओ, उनसे मिलने हम जाएंगे, डरेंगे नहीं। परंतु वे कोई गलत काम कराना चाहते है तो हम उनसे कहेंगे, हम यह बात मान नहीं सकते हैं। चाहे तुम हमें समाप्त कर दो। उक्त वक्तव्य के आधार पर विनोबा भावे जी ने यह स्पष्ट करने का

प्रयास किया कि क्या अंतराष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह आंदोलन गतिमान हो सकता है ? यदि हो सकता है तो उसका स्वरुप क्या होगा ? क्या अहिंसा के मार्ग से अंतराष्ट्रीय विषयो को सुलझाया जा सकता है ? विषय चिंतनीय है, सोचने का विषय है कि यदि आक्रमणकारी हमारी देश कि सीमा में प्रवेश करता है तो क्या हम उस समय उसका प्रतिकार उसी कि भाषा में करें या अहिंसा के मार्ग को स्वीकार करे ! आवश्यक है कि सत्याग्रह को वर्तमान परिदृश्य से परिभाषित किए जाने की। मैं यह नहीं कहता कि हमे हिंसा का मार्ग अपना लेना चाहिए परन्तु हमको यह निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है कि सत्याग्रह की सीमाएं क्या है ? हमको यह भी निर्धारित करने कि आवश्यकता है कि वर्तमान समय में सत्याग्रह के निर्देशों कि प्रासंगिकता उतनी ही है जितनी पूर्व में थी।

जहां तक मेरा मानना है कि 'सत्याग्रह, किसी देश कि आंतरिक समस्याओं से लड़ने हेतु सशक्त माध्यम हो सकता है परन्तु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह आंशिक रूप से असफल सिद्ध होगा। मैं आंशिक सफल इस मत से कहता हूं कि यदि विषय किसी देश कि आंतरिक सुरक्षा व बाह्य सुरक्षा से सम्बंधित है तब सत्याग्रह पूर्णतया विफल सिद्ध होगा परन्तु जलवायु संकट, पर्यावरण सुरक्षा, जल संरक्षण, अंतरिक्ष अभियान पर सूक्ष्म नियंत्रण, परमाणु बम निर्माण व प्रयोग पर सहमति आदि विषयो पर सत्याग्रह के माध्यम से विश्व को एक बड़े संकट से बचाया जा सकता है।

इस हेतु आवश्यकता है पैरवी करने वाले देशों की। ध्यान रखने का विषय यह भी है जो देश इन विषयो पर सत्याग्रह में प्रतिभाग न करें उनको पूर्ण विनम्रता व सहजता के साथ अलग-अलग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छोड़ देना चाहिए। उनको किसी भी तरह से सहयोग की भावना नहीं रखी जानी चाहिए जो की एक सत्याग्रह की श्रेणी में समझा जाएगा। सत्याग्रह का स्वरुप समझने व उनको अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अमल में लाने की गहन आवश्यकता है। इसके बिना सुखद विश्व की संकल्पना सिद्ध नहीं होगी।

नारी की महत्ता व अस्तित्व का पर्व है 'देवउठनी एकादशी'

तुलसी विवाह पर्व विशेष

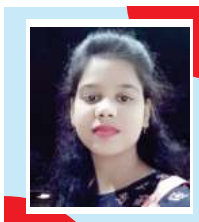

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
गरियाबंद छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ में तीज-त्यौहारों का बहुत महत्व है। यहाँ अनेक प्रकार के तीज-त्यौहार मनाये जाते हैं। कार्तिक मास में दीपावली के बाद देवउठनी एकादशी का पर्व मनाया जाता है, जिसे छोटी दीपावली भी कहते हैं। इस दिन माता तुलसी और श्रीहरि विष्णु जी का विवाह शुभ माना जाता है। कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष के एकादश को देवउठनी एकादशी मनायी जाती है। पौराणिक कथानुसार आषाढ़ शुक्ल पक्ष से कार्तिक शुक्ल पक्ष चार माह तक भगवान श्रीहरि विष्णु क्षीरसागर में शयन करते हैं। भगवान विष्णु के शयनकाल में कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता है। कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष के दिन चार माह की निद्रा से जागृत होने के बाद देवउठनी एकादशी मनायी जाती है। भगवान विष्णु जी के साथ-साथ सभी देवताओं की भी पूजा की जाती है। इसी दिन से शुभ एवं मांगलिक कार्यों का प्रारंभ होता है। कहा जाता है कि वृंदा राक्षस कुल में जन्मी एक कन्या थी। राक्षस कुल में जन्म लेने की बाद भी वह भगवान विष्णु की परम भक्त थी। जब वह विवाह योग्य हुई तब उसका विवाह जालंधर नाम के राक्षस के साथ हुआ। वृंदा बड़ी ही पतिव्रता स्त्री थी। सदैव अपने पति की सेवा में लगी रहती थी। अपने पति जालंधर को हर समस्या से बचाती थी। वह भगवान की भक्ति कर के उनकी रक्षा करती थी।

एक बार भीषण देवासूर संग्राम हुआ। जालंधर एक बहुत बलशाली दानव था। जब देवताओं से युद्ध करने जालंधर जा रहा था, तभी वृंदा ने कहा 'हे स्वामी मैं आपकी विजयी होने के लिए घोर तपस्या करूँगी। भगवान से प्रार्थना करूँगी कि जब तक आप विजय लौटकर नहीं आयेंगे, तब तक मैं तप में लीन रहूँगी। जालंधर युद्ध में चला गया। वृंदा अपने तप में लीन हो गयी। वृंदा के तप का प्रभाव देवताओं को दिखने लगा। युद्ध में देवताओं की हार होने लगी। तभी देवताओं ने श्री हरि विष्णु के पास जाकर प्रार्थना करने लगे 'त्राहि माम...! त्राहि माम...! हे प्रभु ! हमारी रक्षा कीजिए। युद्ध में हम देवतागण हारने लगे हैं। यह वृंदा के तप का प्रभाव है। पर अब जैसे भी हो,

वृंदा का तप भंग होना ही चाहिए। हमारी मदद कीजिए स्वामी। भगवान विष्णु बोले 'वृंदा मेरी परम भक्त है। मैं उनके साथ छल नहीं कर सकता। देवतागण विनती करने लगे, तब विष्णु जी देवहित को ध्यान रख जालंधर का वेष धारण कर के वृंदा के द्वार पर पहुँचे। उन्हें देखकर वृंदा खुश हो गयीय और पूजा छोड़ दी। उसकी ईश्वर के प्रति एकाग्रता ध्वंस हुई। उसी समय वृंदा का संकल्प टूट गयाय और जालंधर मारा गया। जालंधर का कटा हुआ सिर महल में गिरा। तभी वृंदा की दृष्टि जालंधर का वेश धारण किये श्रीहरि विष्णु जी पर पड़ी। उसने श्री हरि विष्णु जी को पहचान लिया। श्रीहरि का छल वृंदा समझ गयी। उसने श्री विष्णु जी को श्राप दे डाला। श्रीहरि विष्णु एक पत्थर बन गये। वृंदा अपने पति का सिर लेकर सती हो गयी। उसके राख से पौधा निकला। श्री विष्णु उस पौधे का नाम तुलसी रखा और कहा कि मैं हमेशा तुलसी के साथ पत्थर रूप में रहूँगा। शालिग्राम के नाम से मुझे जाना जाएगा। तब से इन दोनों की एक साथ पूजा होती है।

कार्तिक माह में उनका विवाह हुआ था, तब से आज तक लोग इस दिन को तुलसी विवाहोत्सव के रूप में मनाते आ रहे हैं। देष में विभिन्न रीति -रिवाज हैं। इस पर्व को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से मनाया जाता है। इस दिन गन्ना-पूजा का विशेष महत्व होता है। लोग अपने-अपने घरों में गन्ना की पूजा करते हैं। इसी दिन से गन्ना की पहली कटाई की जाती है। इसलिए इसकी पूजा होती है। तुलसी विवाह के दिन महिलाएँ व्रत रखती हैं। सुबह से शाम तक पूजा-पाठ में लीन रहती हैं।

छत्तीसगढ़ में एक रिवाज है कि पूजा सम्पन्न होने के बाद एक-दूसरे के घर प्रसाद पहुँचाते हैं। इस तरह छोटी दीपावली पर्व की शुभकामनाएँ देते हैं। इससे लोगों में प्रेम, भ्रातृत्व, एकता जैसे मानवीय भावनाएँ पनपती हैं। कई क्षेत्रों में आज के दिन भी राऊत भाई गायों को सोहई बाँधते हैं। दोहा पारते हैं। फिर उन राऊत भाइयों को विदा करते हुए उन्हें सुपा भर धान व राशि भेंट करते हैं, जिसे 'सुखधना' कहा जाता है।

यह एक श्रद्धा-भक्ति का त्यौहार है। पर आधुनिकता के चलते धीरे-धीरे ये रीति-रिवाज खत्म होती जा रही है। आजकल शहरों में तुलसीविवाह की रस्म गन्नापूजा तक ही सिमट कर रह गयी है। एक-दूसरे से मेल-मिलाप व प्रसाद-वितरण की रस्में खत्म होती जा रही है। हमें इन रस्म-रिवाजों को जीवित रखनी हैय जिससे भावी पीढ़ी देवउठनी पर्व के रीति-रिवाजों से अनभिज्ञ न हो।।

समाज के व्यक्तियों का उत्कृष्ट निर्माण करता है शिक्षक : डा. अवनीश

■ एसएस कॉलेज में एमएड प्रशिक्षुओं का परिचय कार्यक्रम सम्पन्न

लोक पहल

शाहजहांपुर। समाज में शिक्षक एक ऐसा प्राणी है जो किसी भी समाज के व्यक्तियों का उत्कृष्ट निर्माण करता है, मानव में मानवीय गुणों का विकास करता है और व्यक्ति के जीवन को एक नई दिशा प्रदान करता है। हमारे विद्यालयों में श्रेष्ठ अध्यापकों के द्वारा श्रेष्ठ व्यक्तियों का निर्माण किया जाता है। उक्त विचार एसएस कॉलेज के प्रबन्ध समिति के सचिव डॉ अवनीश कुमार मिश्र ने शिक्षक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एमएड प्रथम वर्ष के अधिष्ठापन एवं अभिविन्यास कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने एमएड के नव प्रवेशित प्रशिक्षुओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आपको एक ऐसा शिक्षक बनना है जो व्यक्ति में निहित परमात्मा को पहचान सके। जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल भौतिक संसाधन जुटाना ही नहीं है बल्कि एक श्रेष्ठ नागरिक बनकर समाज के लिए अपना योगदान देना भी है। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन के साथ हुआ। विभाग की संगीत प्राध्यापिका डॉ प्रियंका शर्मा के नेतृत्व में बीएड द्वितीय वर्ष की छात्राओं सौम्या सिंह, कृतिका चन्देल, अंशिका सिंह और अंशिता मिश्रा ने सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में स्वागत करते हुए प्रो. डॉ प्रभात शुक्ल ने एमएड प्रशिक्षण की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने एमेएड प्रशिक्षुओं को विश्वास दिलाया कि यदि आप विभाग के नियमानुसार अनुशासित रहकर अपना प्रशिक्षणकाल पूर्ण करेंगे तो आपकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रहेगा।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो डॉ राकेश कुमार आजाद ने कहा कि एक शिक्षक समाज को एक सकारात्मक दिशा दिखाता है। वह हमारे अन्दर समाज कल्याण की भावना जागृत करता है। विभागाध्यक्ष प्रो डॉ मीना शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं को किया गया जागरूक, बताए अधिकार

लोक पहल

शाहजहांपुर। महिला कल्याण विभाग की ओर से मिशन शक्ति के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में किया गया। वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रबंधक नमिता यादव ने बताया कि वर्तमान समय में हो रहे साइबर क्राइम, उनके अधिकारों के प्रति बालिकाओं को जागरूक रहना होगा। उन्होंने वन स्टॉप सेंटर के कार्यान्वन व कार्यप्रणाली के विषय में विस्तार पूर्वक बताया। छात्राओं को बताया कि किसी भी तरह की समस्या होने पर वह वन स्टॉप सेंटर आकर अपनी समस्या का समाधान कर सकती हैं।

प्रभारी जिला मिशन कोऑर्डिनेटर अमृता दीक्षित ने बताया कि बाल विवाह, बाल श्रम अपराध है।

उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या पर भी विस्तृत चर्चा की। सरकार द्वारा संचालित समस्त योजनाओं निराश्रित महिला पेंशन योजना, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, दिव्यांग पेंशन योजना, प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना, वृद्धा पेंशन योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के विषय जानकारी दी।

कार्यक्रम में वन स्टॉप सेंटर से केंद्र प्रबंधक नमिता यादव, प्रभारी जिला मिशन कोऑर्डिनेटर अमृता दीक्षित, वार्डेन अनुरंजना, अर्चना बिश्नोई, सुचिता सिंह आराधना श्रीवास्तव, आरती, सुधारानी स्टाफ, छात्राएं आदि मौजूद रहे।

अहंकार त्यागने का संदेश देती है गोवर्धन पूजा

डॉ मनोज कुमार मिश्रा
शाहजहांपुर

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। प्रतिवर्ष हमारे देश में छोटे-बड़े अनेक प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। इन्हीं त्योहारों में से एक बड़ा त्यौहार है दीपावली। दीपावली लगभग संपूर्ण देश में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। दीपावली के साथ कुछ अन्य त्यौहार भी मनाए जाते हैं, जिनमें से एक प्रमुख त्योहार है गोवर्धन पूजा। यह त्यौहार दीपावली के तुरन्त बाद मनाया जाता है। इस त्यौहार का भारतीय लोक जीवन में बहुत महत्व है। इस दिन लोग संपूर्ण हिंदू समाज के लिए पूजनीय गाय माता की पूजा करते हैं। गोवर्धन के दिन इसी गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाकर उनकी पूजा की जाती है। इस दिन लोग गाय के साथ देवी अन्नपूर्णा और भगवान कृष्ण की भी पूजा करते हैं। यह पर्व मुख्यता उत्तर भारत में मनाया जाता है, किंतु देश के कुछ अन्य हिस्सों में भी लोग इसे विभिन्न तरीकों से मनाते हैं।

गोवर्धन पूजा के संबंध में मान्यता है कि है इंद्रदेव का अभिमान चूर करने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने एक लीला रची। भगवान श्री कृष्ण ने देखा कि सभी ब्रजवासी उत्सव की भांति किसी की पूजा की तैयारी में लगे हैं। उन्होंने बड़े भोलेपन से मां यशोदा से पूछा कि मां यह लोग किनकी पूजा की तैयारी कर रहे हैं? तो मैया ने बताया कि देवराज इंद्र की पूजा के लिए अन्नकूट की तैयारी हो रही है। तब भगवान ने पूछा कि हम इंद्र की पूजा क्यों करते हैं? तो मैया ने बताया कि इंद्रदेव हमें बरसात से पानी देते हैं, जिससे खेतों में अन्न की उपज होती है। इससे हमारी गायों को चारा मिलता है। भगवान श्री कृष्ण ने इस पर बड़ा तर्क वितर्क किया और इंद्र देव की वर्षों से चली आ रही पूजा को बंद कराकर अपने उपासकों की पूजा प्रारंभ करा दी। इससे इंद्रदेव काफी कुपित हो गए। उन्होंने इसे अपना अपमान समझकर मूसलाधार वर्षा आरंभ कर दी। सभी बृजवासी भयभीत हो गए। चारों तरफत्राहि-त्राहि मच गई। ब्रज वासियों ने भगवान श्री कृष्ण से कहा कि यह सब तुम्हारी वजह से हो रहा है। अब तुम ही बताओ कि हम लोग इंद्र की पूजा क्यों न करें। तब श्री कृष्ण ने अपनी छोटी सी उंगली पर उस विशाल गोवर्धन पर्वत को उठा लिया तथा ब्रज वासियों को उसके नीचे आने को कहा। सभी बृजवासी गोवर्धन पर्वत के नीचे आकर सुरक्षित हो गए। यह देखकर इंद्रदेव और अधिक क्रोधित हो गए और उन्होंने और तीव्र गति से वर्षा आरंभ कर दी। इससे लोग फिर भयभीत होने लगे तब श्री कृष्ण ने इंद्र का मान मर्दन करने के लिए अपने सुदर्शन चक्र से कहा आप पर्वत के ऊपर रहकर वर्षा की गति को नियंत्रित करें और शेषनाग से कहा आप मेड़ बनाकर पानी को पर्वत की ओर आने से रोकें। लगातार 7 दिन तक वर्षा होने के पश्चात कोई प्रभाव न दिखने पर इंद्रदेव काफी विचलित हो गए और वह ब्रह्मा जी के पास गए तथा उन्होंने संपूर्ण वृतांत ब्रह्मा जी के सामने कह सुनाया। तब ब्रह्मा जी ने पूरी सच्चाई इंद्रदेव को बताई कि तुम जिनकी बात कर रहे हो, वह स्वयं भगवान विष्णु के साक्षात् अंश हैं, स्वयं नारायण है। ब्रह्मा जी से यह जानकर इंद्रदेव अत्यंत लज्जित हुए। उन्होंने पृथ्वी पर आकर भगवान श्री कृष्ण से क्षमा याचना की और मुरलीधर की पूजा करके उन्हें भोग लगाया। उसी दिन से संपूर्ण ब्रज प्रदेश मे ही नहीं बल्कि देश के अधिकांश हिस्सों में गोवर्धन पूजा होने लगी।

गोवर्धन पूजा के दिन घरों में महिलाओं द्वारा आंगन में गोबर से लिपाई करके गोवर्धन के प्रतीक ग्वाले, गाय आदि का गाय के गोबर से विभिन्न आकृतियां बनाई जाती हैं। उन आकृतियों के आंखों के स्थान पर खील अथवा कौड़िया लगाई जाती हैं तथा दांतों के स्थान पर खील लगाई जाती हैं। खील बताशे से उनकी पूजा की जाती है। गोवर्धन पर्वत पर लगे पेड़ों के प्रतीक स्वरूप पीली या सफेद रंग की सींके लगाकर उनके ऊपर रुई के गुच्छे लगाए जाते हैं। तेल का दीपक जलाया जाता है। घर की महिलाएं इनकी परिक्रमा करके मंगल गीत गाती हैं। गोवर्धन पूजा में रखा गया तेल के दीपक से काजल बनाकर घर के सभी लोग आंखों में लगाते हैं। यह मान्यता है कि इससे आंखों की रोशनी हमेशा बनी रहती है और आंखों के रोगों से हमारी रक्षा होती है।

यह त्यौहार हमें संदेश देता है कि हमें कभी भी अपनी शक्ति पर घमंड नहीं करना चाहिए तथा हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा अहंकार तोड़ने वाला भी कोई ना कोई है। इसलिए हमें इन त्योहारों से एक सीख मिलती है कि जब जब पृथ्वी पर अहंकारियों ने ईश्वर से ही प्राप्त शक्तियां पाकर अत्याचार किए। तब तब भगवान किसी न किसी रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए और उनके अहंकार को समाप्त किया, चाहे वह स्वयं देवता हों,मनुष्य हो या राक्षस। एक दिन सभी को अपने अहंकार का त्याग करना पड़ता है।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।

प्रदेश के लोगों को अब मिलेगी मौसम व वर्षा की सटीक जानकारी

■ मुख्य सचिव ने 200 स्वचलित रेनगेज व 450 मौसम केंद्रों का किया शुभारंभ

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के लोगों को अब वर्षा और मौसम की सटीक जानकारी मिल सकेगी। सरकार ने इसके लिए प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर मौसम केन्द्रों की स्थापना की है। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने प्रदेश में लगाए जा रहे 200 स्वचलित रेनगेज व 450 मौसम केंद्रों का शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि स्वचालित मौसम केंद्र (एडब्ल्यूएस) व रेनगेज (वर्षामापी यंत्र) के विविध उपयोग हैं। यह केंद्र न सिर्फ मौसम की सही जानकारी उपलब्ध कराएंगे, बल्कि प्रारंभिक चेतावनी देने तथा आपदा पूर्व तैयारियों को भी बेहतर बनाने मे उपयोगी होंगे।

यह केंद्र बाढ़, गर्मी व लू, शीत लहर, सूखा, आंधी, तूफान, भारी वर्षा के प्रबंधन में लाभकारी होंगे। वर्तमान में प्रदेश में मौसम विभाग के पास केवल 69 स्वचालित मौसम केंद्र (एडब्ल्यूएस) और स्वचालित यंत्र उपलब्ध हैं, जोकि प्रदेश की आपदा संवेदनशीलता को देखते हुये अपर्याप्त हैं।

राज्य के प्रत्येक तहसील में एक व शहरी क्षेत्रों में सघन रूप से इस प्रकार कुल 450 स्वचालित मौसम केंद्रों और प्रत्येक ब्लाक में न्यूनतम दो-दो रेनगेज केंद्रों का एक नेटवर्क स्थापित किया जा रहा है। यह केंद्र मौसम संबंधी और पर्यावरण निगरानी के लिए तापमान, आर्द्रता, वायुमंडलीय दबाव, वर्षा, हवा की गति और हवा की दिशा जैसे सटीक जानकारी प्रदान करने के लिए वायुमंडलीय मापदंडों को मापने के लिए सेंसर से लैस हैं। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव राजस्व सुधीर गर्ग, प्रमुख स्टाफ अफसर मुख्य सचिव अमृता सोनी, प्रमुख सचिव नियोजन आलोक कुमार, एमडी यूपीपीसीएल पकंज कुमार, राहत आयुक्त जीएस नवीन कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

अजब गजबः इंसान ही नहीं खूंखार जानवर भी रखते हैं 'व्रत'

लोक पहल

कानपुर। अभी तक आपने इंसानों को विभिन्न त्यौहारों या सप्ताह के विभिन्न दिनों में 'व्रत' रखते हुए सुना होगा लेकिन इंसान ही नहीं जानवर भी अपनी सेहत का ख्याल रखने के लिए सप्ताह में एक दिन 'व्रत' रखते हैं। उप्र के कानपुर स्थित प्राणि उद्यान में हर मंगलवार को यहां रह रहे मांसाहारी जानवरों को उपवास कराया जाता है।

प्राणि उद्यान के अधिकारियों के मुताबिक, ऐसा उनके स्वास्थ्य के लिए किया जाता है। प्राणि उद्यान में 1200 जानवर हैं। इनमें 24 तेंदुएं, चार शेर व नौ बाघ शामिल हैं। तेंदुओं को चार किलोग्राम, शेर व बाघ को आठ से 10 किलोग्राम मांस प्रतिदिन दिया जाता है। प्राणि उद्यान प्रशासन इनको सप्ताह में एक दिन मांस नहीं देता है।

क्षेत्रीय वन अधिकारी नवेद इकराम का कहना है कि यह उनके स्वास्थ्य से जुड़ा है। एक दिन भोजन न मिलने से वे उर्जावान बने रहते हैं। जंगल में मांसाहारी जानवरों को प्रतिदिन भोजन के लिए संघर्ष करना पड़ता है। प्राणि उद्यान के निदेशक केके सिंह के अनुसार, जरूरी नहीं है कि हर दिन उनको भोजन मिले। प्राणि उद्यान में मांसाहारी जानवरों को सप्ताह में एक दिन भोजन नहीं दिया जाता है। इससे उनके पाचन तंत्र पर प्रभाव पड़ता है तथा स्वास्थ्य बेहतर रहता है।

यूपी में पांच एक्सप्रेसवे के किनारे बनेंगे 30 औद्योगिक गलियारे

लोक पहल

लखनऊ। प्रदेश में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए एक्सप्रेसवे के किनारे औद्योगिक गलियारे विकसित किये जाएंगे। सरकार ने इसकी कार्ययोजना पर काम करना शुरू कर दिया है। इसके चलते जहां एक ओर प्रदेशवासियों को बेहतर सड़को के साथ औद्योगिक विकास का लाभ भी मिलेगा। एक्सप्रेसवे के जरिए प्रदेश की कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के साथ ही अब इनके किनारे औद्योगिक केंद्रों की स्थापना के लिए औद्योगिक गलियारे विकसित किए जाने की योजना पर अमल शुरू किया गया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवेज इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी (यूपीडा) ने औद्योगिक गलियारे के लिए 30 स्थानों का चयन कर लिया है। यूपीडा प्रदेश में पांच एक्सप्रेसवेज के किनारे औद्योगिक गलियारों की स्थापना करेगा। इनमें आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे, पूर्वांचल एक्सप्रेसवे, बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे, गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे एवं गंगा एक्सप्रेसवे शामिल हैं। 5800 हेक्टेयर पर विकसित होने वाले औद्योगिक गलियारों के निर्माण पर करीब सात हजार करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान लगाया गया है।

हाल ही में एक उच्चस्तरीय बैठक में सीएम योगी के समक्ष इन पांचों एक्सप्रेसवेज के किनारे चिह्नित औद्योगिक गलियारों का विवरण प्रस्तुत किया। इसके अनुसार प्रदेश के 12 जिलों को जोड़ने वाले गंगा एक्सप्रेसवे पर 11 स्थलों को औद्योगिक गलियारे के लिए चुना गया है, जिसका कुल क्षेत्रफल 1522 हेक्टेयर है। इस पर करीब 2300 करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है।

दुबई में 'तहबीब' का आयोजन एक दिसम्बर से

■ विश्व के 70 साहित्यकार और कलाकार होंगे एक मंच पर

लोक पहल

कानपुर। यूएई के राष्ट्रीय दिवस के मौके पर, तारिक फैजी की संस्था लीडिंग एज, दुबई इंडिया क्लब के सहयोग से 1 से 3 दिसंबर 2023 तक इंडिया क्लब, दुबई में एक मल्टी लेंग्वेज वैश्विक कविता और कला फेस्टिबल 'तहबीब' का आयोजन कर रहा है। कविता सत्र पांच भाषाओं, उर्दू, हिंदी, मलयालम, अंग्रेजी और अरबी में आयोजित किया जायेगा। बॉलीवुड के मशहूर लेखक और गीतकार जावेद अख्तर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। कार्यक्रम में अरबी के शायर डॉ. शिहाब घनम नूर महमूद, हमदा मुहिरी, वाला जमाल ,उर्दू के अली अकबर नातीक, आतिफ तौकीर, इंजील साहिफ, सर्वत जहरा हिंदी के मेगी असनानी अंग्रेजी के मार्क फ्लिडेस, और मलयालम के शायर इस्माइल मेलादी शामिल होंगे।

कार्यक्रम में गजल, दास्तानगोई, साहित्य चर्चा, सूफी गीत और कथक डांस के साथ लाइव पेंटिंग शामिल होगी। दीबा इरफान, शिराज, माया, तमरीज इरफान इजहार, शाजी हनीफ, उमर फारूक, कानपुर इंडिया से खालिद नसीम सिद्दीकी, वाजिद अमीर महविश अहसन, जिया मजकूर कमर रजा शहजाद, कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। तीन दिवसीय यह कार्यक्रम पांच भाषाओं पर आधारित है तथा तारिक फैजी का यह एक ऐतिहासिक कदम है। दुबई की धरती पर पहली बार ऐसा प्रयास किया जा रहा है की विश्व की 70 प्रसिद्ध हस्तियां एक मंच पर आए यह जानकारी कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी खालिद नसीम सिद्दीकी ने दी।

लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुटी भाजपा, कई जिलों के प्रभारी बदले

लोक पहल

लखनऊ। लोकसभा चुनाव को लेकर सत्ताधारी पार्टी भाजपा ने अभी से अपनी तैयारियों को अंजाम देना शुरू कर दिया है। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा अब 2024 के चुनाव के लिए तैयारी कर रही है। लखनऊ में पार्टी मुख्यालय में प्रदेश पदाधिकारियों और जिलाध्यक्षों की बैठक हुई जिसमें कई मुद्दों पर चर्चा की गई और कई जिलों के पदाधिकारी बदले गए हैं।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने बताया कि अवध क्षेत्र में प्रदेश महामंत्री संजय राय, काशी क्षेत्र में अमरपाल मौर्य, गोरखपुर क्षेत्र में गोविंद नारायण शुक्ल, कानपुर क्षेत्र में अनूप गुप्ता, पश्चिम क्षेत्र में सुभाष यदुवंश और ब्रज क्षेत्र में प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष सिंह को प्रभारी नियुक्त किया है। उन्होंने बताया कि सभी 98 संगठनात्मक जिलों मे भी प्रभारी बदले गए है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि लोकसभा चुनाव के मद्देनजर प्रदेश कार्यालय में हुई जिलाध्यक्षों और प्रदेश पदाधिकारी की बैठक में लोकसभा और विधानसभा चुनाव संचालन समिति गठित करने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि लोकसभा चुनाव के लिए बूथ कमेटी का गठन किया जाएगा।

अयोध्या में राम मन्दिर की मूर्तियों का 22 जनवरी को पीएम नरेन्द्र मोदी करेंगे प्राण प्रतिष्ठा

लोक पहल

लखनऊ। इंतजार की घड़ियां समाप्त होने वाली है। अयोध्या में बन रहे भव्य राम मन्दिर में स्थापित मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा का शुभ मुहुर्त निकल आया है। 22 जनवरी को अभिजीत मुहूर्त मृगषिरा नक्षत्र में दोपहर 12:20 बजे पीएम नरेंद्र मोदी रामलला की प्राण प्रतिष्ठा करेंगे। इस समारोह को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देने के लिए साकेत निलयम में संघ परिवार की बैठक हुई। इसमें समारोह के अभियान को चार चरणों में बांटकर तैयारियों को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया। इसमें घर-घर संपर्क योजना के तहत 10 करोड़ परिवारों में पूजित अक्षत, रामलला के विग्रह का चित्र व एक पत्रक दिया जाएगा।

इसके जरिये लोगों से समारोह के दिन दीपोत्सव मनाने की अपील की जाएगी। 22 जनवरी को तीसरे चरण में रखा गया है। उस दिन पूरे देश में उत्सव हो व घर-घर अनुष्ठान हों, ऐसा माहौल बनाया जाएगा। चौथे चरण में देशभर के भक्तों को रामलला के दर्शन कराने की योजना है। यह चरण गणतंत्र दिवस से शुरू होकर 22 फरवरी तक चलेगा। यह अभियान प्रांतवार चलाया जाएगा। अवध प्रांत के कार्यकर्ताओं को 31 जनवरी व 01 फरवरी को दर्शन कराने पर योजना है।

रात के अंधेरे में गुलदस्ता लेकर योगी-मोदी से मिलते हैं सपा नेता: ओमप्रकाश राजभर

लोक पहल

संभल। कभी समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की तारीफों में कसीदें कढ़ने वाले ओमप्रकाश राजभर आजकल सपा के खिलाफ खुलकर मोर्चा खोले हुए हैं। उन्हें ऐसा लग रहा है कि सपा की खिलाफत करके वह उत्तर प्रदेश मंत्रिमण्डल में अपना स्थान सुरक्षित कर लेंगे। उत्तर प्रदेश में काफी दिनों से मंत्रिमंडल विस्तार की चर्चा चल रही है। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रमुख ओमप्रकाश राजभर लगातार दावा कर रहे हैं कि उन्हें योगी कैबिनेट में जगह मिलेगी। इसको लेकर वो कई बार डेट भी दे चुके हैं। ऐसे में बीते दिन उन्होंने फिर से कहा- मंत्रिमंडल का विस्तार होगा तो ओमप्रकाश राजभर मंत्री जरूर बनेगा।

दरअसल, राजभर कल्कि महोत्सव में शामिल होने के लिए संभल पहुंचे थे। यहां उन्होंने मीडिया से बात करते हुए खुद के मंत्री बनने की बात दोहराई साथ ही हिंदू देवी-देवताओं पर विवादित टिप्पड़ी को लेकर सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य पर निशाना साधा। ओमप्रकाश राजभर ने कहा स्वामी प्रसाद मौर्य अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं। वो अखिलेश यादव के इशारे पर बोल रहे हैं। सभी कुछ वोट के लिए कर रहे हैं। समाजवादी पार्टी पर हमला बोलते हुए राजभर ने कहा कि सपा को वोट देने वाला 18 प्रतिशत मुसलमान भी समझ चुका है कि उसने नफरत के अलावा कुछ नहीं दिया है। उत्तर प्रदेश में चार बार सपा की सरकार रही और 5 साल मुख्यमंत्री अखिलेश यादव रहे। अब उसमें राजनीतिक भागीदारी या नौकरियों में हिस्सेदारी की बात कर लीजिए।

राजभर ने कहा कि जो गठबंधन (इंडिया) अभी बना है उसमें नीतीश, जयंत और अखिलेश यादव अलग-अलग राग अलाप रहे हैं, तो इस स्थिति में बात आगे कैसे बनेगी। राजभर ने यह भी कहा कि सपा दिन में भारतीय जनता पार्टी के खिलाफबोलती है और रात में गुलदस्ता लेकर मोदी-योगी से मिलते हैं।

अपनी ही सरकार के खिलाफ बरसे भाजपा सांसद वरुण गांधी

लोक पहल

पीलीभीत। भाजपा सांसद वरूण गांधी ने एक बार फिर अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया है। पहले भी सांसद वरूण गांधी केन्द्र व प्रदेष की भाजपा सरकार के खिलाफ आवाज उठाकर पार्टी को असहज स्थिति में डालने का काम कर चुके है। पीलीभीत के सांसद वरुण गांधी ने बेरोजगारी के मुद्दे को लेकर एक बार फिर सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि देश और प्रदेश में बेरोजगारी चरम पर है। पीलीभीत के लोग हरियाणा और गुजरात में जाकर मजदूरी करने को मजबूर हैं। सांसद ने कहा कि सरकार नौकरियां निकालती हैं। बेरोजगार पांच-पांच बार आवेदन करते हैं, लेकिन हर बार पेपर लीक हो जाता है। बार-बार आवेदन करने में बेरोजगार युवाओं का काफी पैसा भी खर्च हो रहा है और उन्हें नौकरी भी नहीं मिल पा रही है।

सांसद वरुण गांधी बीसलपुर क्षेत्र में पहुंचे। उन्होंने मजगमां, भसूड़ा, रोहनियां,, महुआ, बीरमपुर और अभयपुर आदि गांवों में जनसंवाद किया। सांसद ने कहा कि संविदा कर्मचारियों के साथ धोखा किया जा रहा है। गरीबों को कर्ज नहीं मिल पा रहा है। पूरे देश में विभिन्न विभागों के एक करोड़ पद रिक्त हैं लेकिन उन्हें जानबूझ कर भरा नहीं जा रहा है।

सांसद ने कहा कि पीलीभीत की जनता उनके परिवार की सदस्य हैं। वह पीलीभीत की जनता के दुख में हमेशा खड़े रहे और भविष्य में भी खड़े रहेंगे।